जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -०१ सितंबर २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४४ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं श्वेताम्बर जैन दिगम्बर हम सब जैन हैं

क्षमा वीरों का आभूषण, दूर करे यह मन का प्रदूषण

पू. पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

पू. मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

गुरुकृपा से अमृत योग साधना

भद्रबाहु स्वामी, जिनका जैन जगत् में बहुत बड़ा नाम है, वे प्रतिष्ठानपुर के ऋद्धि सम्पन्न निवासी थे। घर में वैभव की बहुलता थी, तथा पाँचों इन्द्रियों से सम्बन्धित अद्वितीय सुख-सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में उन्हें उपलब्ध थी, लेकिन जब वे सन्तों के सम्पर्क में पहुँचे तो उन्हें सांसारिक नश्वरता का स्वरूप ज्ञान हुआ और उन्हें प्रतिबोध मिला कि इस संसार के पदार्थ कितनी ही मात्रा में क्यों न मिल जायें, पाँचों इन्द्रियों के विषय भी पूर्णतया क्यों न प्राप्त होते रहें, देवकुमार की तरह इस शरीर को भी अमरता क्यों न मिल जाये - अन्तरात्मा की तुष्टि इन सबसे होने वाली नहीं है। अन्तरात्मा की तुष्टि तो आन्तरिक शक्ति के प्रकटीकरण से ही हो सकती है।

महात्मा के इस उपदेश का असर भद्रबाहु की आत्मा पर हुआ और उनमें यह जिज्ञासा पैदा हुई कि इस मनुष्य तन को यदि सार्थक बनाना है तो अमृत योग साधना करनी चाहिये और अमृत प्राप्त करने के उद्देश्य से अमृतमयी दिशा में प्रयाण करना चाहिये। भद्रबाहु ने अपने छोटे भ्राता को बुलाया और सारे वैभव का परित्याग करके अमृत साधना के लिये प्रयाण करने का अपना संकल्प उसे बताया। उन्होंने कहा - ''कुछ समय पहले मैं सारी सम्पत्ति का बंटवारा करना चाह रहा था और मायावी व्यवहार से अधिक सम्पत्ति ले लेने की योजना भी बना रहा था, लेकिन सन्तों के सम्पर्क से मेरी विचारधारा परिवर्तित हो गई है। मुझे अब आत्मा के विज्ञान का ज्ञान हो गया है सो तुम ही सारे वैभव को सम्भालो मैं तो अब इस प्रपंच से बहुत दूर चले जाना चाहता हूँ।''

छोटे भ्राता ने उत्तर दिया - ''भाई साहब, आपकी तरह मैं भी मायावी बना हुआ था और सम्पत्ति हड़पने की चेष्टा में था। आपका दिल सन्तों की वाणी सुनकर साफ हो गया तो अब मेरा दिल भी आपकी वाणी सुनकर साफ हो गया है। अमृत की प्यास मुझे भी लग गई है। आप आगे बढ़ रहे हैं तो मैं भी अब पीछे न रहूँ। मैं भी अमृतमयी दिशा में आपके साथ ही चलना चाहता हूँ। उन्होंने सम्पत्ति पीछे की सन्तानों को साँप दी और दोनों अमृत साधना की ओर चल पड़े।

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा
SANAT BADJATYA JAIN
Mob. : 098260 75364
17/3, Old Palsia, Raj Kalyan, Indore, Madhya Pradesh, Bharat - 452001
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा
इंजी. कैलाश चन्द्र जैन
महासचिव- बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद, लखनऊ
प्रांतीय प्रकल्प संयोजक-भारत विकास परिषद,
अवध प्रान्त, उत्तर मध्य क्षेत्र - २
कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ
सदस्य- भारतीय जैन मिलन (साकेत) लखनऊ
कोषाध्यक्ष- इंदिरानगर आवासीय महासमिति, लखनऊ
भ्रमणध्वनी - ९४१५४७०१४६
निवास: ९/३३६, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत - २२६०१६

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
मिच्छामी दुक्कड़म
Ashish Kamdar Jain
Ashish Kamdar & Co.
Office: 5, Hari Bhuvan, 1st Floor, Zaver Road,
Near Jain Derasar, Mulund West, Mumbai, Maharashra, Bharat - 400 080
Resi : 201/202, Zenith Tower, A Wing, P K Road, Keshav Pada,
Near Kalidas Natya Mandir, Mulund West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400 080
भ्रमणध्वनि : 98676 77272
अणुडाक : ashishkamdar_ca@yahoo.com

तुम मुझे राष्ट्रभाषा दो
मैं तुम्हें रोजगार दूंगा
-बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी' चरित्र एकलार व सम्पादक

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मदुरै मुनि श्री हिमांशु कुमार जी ठाणा-२ के सान्निध्य में सम्पन्न पर्यूषण महापर्व

गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की असीम कृपा से इस वर्ष मदुरै तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मुनि श्री हिमांशु कुमार जी एवं मुनि श्री हेमंत कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना बड़े ही हर्षोल्लास और सहआनंद के साथ सम्पन्न हुई।

प्रमुख आयोजन :

➤खाद्य संयम दिवस – अनेक भक्तों ने द्रव्य की मर्यादा रखते हुए उपवास एवं संयम साधनाएँ की।

➤सामायिक दिवस – मुनिश्री जी ने 'परम सुख की चाबी' विषय पर प्रवचन दिया, इस अवसर पर २ पचरंगी हुई और सभी ने मिलकर ४१५ सामायिक का लक्ष्य पूर्ण किया।

➤वाणी संयम दिवस – मौन की ५ पचरंगी हुई तथा मुनि श्री जी की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं ने मौन धारण कर अपने जीवन को धन्य बनाया।

➤अणुव्रत चेतना दिवस पर सभी ने छोटे-छोटे त्याग लिए।

➤जप दिवस २०.८.२५ से २६.८.२५ तक भवन में नमस्कार महामंत्र का अखंड जाप चला, एवं ध्यान दिवस पर अनेक साधकों ने गहन ध्यान साधना की।

विशेष अठाइयाँ :

इस बार मुनि श्री जी की प्रेरणा से कई विशेष तप साधनाएँ की गईं, जिनमें सम्मिलित थीं –

८ दिन का उपवास, ८ दिन का मौन, ८ दिन का ई-अठाई, ८ दिन व्यासना, ८ दिन क्रोध उपशमन, ८ दिन एकासन

श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी क्षमता के अनुसार इन अठाइयों में भाग लिया, कुल ६ अठाई और २ नो-तप सम्पन्न हुए, सभी का सभा द्वारा साहित्य से सम्मान किया गया।

प्रतिदिन की आराधना :

आठों दिन प्रातः गुरु वंदना, सायं प्रतिक्रमण एवं रात्रि में अर्हत वंदना के साथ प्रवचन आयोजित हुए।

विषय रहे : 'कर्म हँसावे-कर्म रुलावे', इन प्रवचनों से अनेक लोगों ने आत्म-चिंतन का लाभ लिया।

संवत्सरी महापर्व :

भगवती संवत्सरी महापर्व पर लगभग २०० श्रद्धालुओं ने सामूहिक प्रतिक्रमण किया एवं ८७ पोषध साधनाएँ हुईं।

मैत्री दिवस :

मुनि श्री जी के सान्निध्य में सभी ने 'खमत-खामणा' की भावना से क्षमा याचना की और शांति-सौहार्द बढ़ाने का संकल्प लिया।

सामुहिक पारणा की व्यवस्था सभा द्वारा भवन में रखी गई थी, इस पूरे महापर्व को सफल बनाने में ते.सभा, ट्रस्ट, युवक परिषद्, महिला मंडल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग रहा।

उक्त जानकारी तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका फुलफगर एवं सभा निवर्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने 'जिनागम' पत्रिका के राष्ट्रीय कार्यालय को भेजी है।

-अशोक जीरावला जैन, मदुरै

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Anil Sonawat
Mob.: 9165291234/9424252650/9424253246

Akash Medicose

Near Central Bank, Manendragarh
Korea MCB (C.G.) 497442

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं श्री जी के चरणों में मिच्छामी दुक्कड़म

समाजरत्न
सुभाष ओसवाल जैन
Mob. :- 09810045440

चेयरमैन : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली
अध्यक्ष : भगवान महावीर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी, दिल्ली
अध्यक्ष : साऊथ दिल्ली, जैन समाज, नई दिल्ली
संरक्षक : अ. भा. श्वे. स्था. जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति, नई दिल्ली
निदेशक : महावीर देशना फाउंडेशन लिमिटेड, नई दिल्ली
ट्रस्टी : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

Resi.: C-642, New Friends Colony, New Delhi -110025
Golemarket No. 011-23363729, 23344380
Off. 011-23854400 Email : oswalsubash@gmail.com

रक्षा राज्य मंत्री के आग्रह पर नितिन गडकरी ने दिए जांच के निर्देश

रांची लोकसभा क्षेत्र के ईचागढ़ में राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे देवलटांड़ में जैन धर्मावलंबियों के भगवान आदिनाथ का अति प्राचीन मंदिर स्थित है। लगभग ३००० वर्ष पुराने इस मंदिर तक जाने के लिए सड़क नहीं थी। इस मामले को लेकर रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ ने वर्ष २०२२ में यहां सड़क निर्माण का आग्रह केंद्रीय परिवहन एवं राज-ामार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी से किया था। इस क्षेत्र के विकास का मामला लोकसभा में भी उठाया था। इस आग्रह के कारण उन्होंने Central Road& Infrastructure Fund के तहत २.१ करोड़ रुपए की लागत से सड़क निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर दी थी। इसके लिए राशि भी झारखंड सरकार के संबंधित विभाग को भेज दी गई। दुर्भाग्यवश उपरोक्त सड़क का निर्माण आजतक नहीं हो पाया। आज भी श्रद्धालुओं को उपरोक्त पवित्र स्थल तक जाने में बहुत समस्या का सामना करना पड़ता है। इस मामले को लेकर श्री संजय सेठ ने पुनः नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी से मुलाकात की और पूरी वस्तुस्थिति से उन्हें अवगत कराया। इस पर त्वरित संज्ञान लेते हुए उन्होंने इस मामले की जांच का निर्देश भी दिया है। इस बाबत रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि लगभग ३००० वर्ष पुराने उपरोक्त स्थल तक जाने के लिए केंद्र सरकार ने सड़क बनाने की स्वीकृति दे दी। राशि भी निर्गत कर दी परंतु झारखंड के अधिकारियों ने सड़क बनाना जरूरी नहीं समझा। यह बताने के लिए काफी है कि किस कदर झारखंड को विकास से दूर किया जा रहा है।

श्री संजय सेठ ने ताराचंद जैन से रांची में मिलने के बाद दिल्ली जाकर स्वत: संज्ञान लेते हुए गडकरी जी से मुलाकात कर ता-राचंद जैन के दिए गए आवेदन को सौंपा व सड़क बनाने का काम आगे बढ़ने का अनुरोध किया।

जय महावीर जय गुरु राम

दीक्षार्थी सुश्री भावना जी छाजेड़ सोलापुर मथानिया, दीक्षार्थी सुश्री कुमकुम जी तातेड सरदारशहर, दीक्षार्थी सुश्री डिम्पल जी धाडीवाल जलगांव एवं परिजनों का श्री साधुमार्गी जैन संघ देशनोक द्वारा आत्मीय स्वागत व बहुमान

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी म.सा. के चरणों में सत-सत् नमन!

ताराचन्द जैन
अध्यक्ष
झारखण्ड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड, झारखण्ड सरकार
Mob: 9431132024/ 9931482805

मुख्य कार्यालयः E २/८, साकेत नगर, हिनू, राँची, झारखण्ड, भारत
क्षेत्रीय कार्यालय : जैन मन्दिर परिसर, देवघर, झारखण्ड, भारत

email: tcjaindeoghar@yahoo.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

'दर्शन सागर अवॉर्ड' का आयोजन सम्पन्न

मुंबईः शिक्षा, समाजसेवा, जीवदया, धर्म, संस्कृति एवं विभिन्न कार्यों के लिए देश का प्रतिष्ठित 'दर्शन सागर अवार्ड - २०२५' इस बार उद्योगपति हितेश दोशी (वारी एनर्जी), विपुल पी शाह (एशियन स्टार), संजय घोड़ावत (घोड़ावत ग्रुप) रमेश जैन (जीएम मॉड्युलर) एवं सिद्धराज लोढ़ा (शताब्दी गौरव) को दिया गया। राष्ट्रसंत आचार्य चंद्रानन सागर सूरीश्वर महाराज के सान्निध्य में मुख्य अतिथि श्रीमती अमृता फडणवीस के हाथों ये सम्मान दिए गए। नाकोड़ा भैरव दर्शन धाम महातीर्थ के चेयरमेन सुखराज नाहर के नेतृत्व में योगी सभागार में १० सितंबर को सुबह ९.३० बजे 'दर्शन सागर अवार्ड' का यह विशेष समारोह सम्पन्न हुआ।

'दर्शन सागर अवार्ड' समारोह में देश के विभिन्न प्रदेशों सहित विदेश से आये प्रमुख अतिथियों की उपस्थिति रही, दर्शन सागर अवॉर्ड समिति के प्रवीण शाह और निरंजन परिहार के अनुसार जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) के एपेक्स चेयरमेन पृथ्वीराज कोठारी एवं विख्यात समाजसेवी विनोदभाई झवेरी का भी सामाजिक सेवाओं के लिए नागरिक अभिनंदन किया गया। नाकोड़ा भैरव दर्शन धाम महातीर्थ के चेयरमेन सुखराज नाहर के नेतृत्व में हुए इस बार का 'दर्शन सागर अवार्ड' समारोह पिछले १९ के साथ गच्छाधिपति आचार्य दर्शन सागर सूरीश्वर महाराज की ३२वीं पुण्य तिथि पर आयोजित यह आयोजन हुआ।

मानवता एवं समाज के प्रत्येक वर्ग के सामुदायिक विकास के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले 'दर्शन सागर अवार्ड' विजेताओं के सम्मान में विभिन्न जैन संघों के ट्रस्टी, पदाधिकारी, सामाजिक संस्थाओं से जुड़े लोग बड़ी संख्या के साथ आयोजन में पहुंचे। नाकोड़ा भैरव दर्शन धाम महातीर्थ के संस्थापक राष्ट्रसंत चंद्रानन सागर के सान्निध्य में होने वाले विभिन्न आयोजनों में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, उपराष्ट्रपति रहे भैरोंसिंह शेखावत, राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया एवं थावरचंद गहलोत सहित मुख्यमंत्री पद पर रहे उद्धव ठाकरे, वसुंधरा राजे, नारायण राणे सहित दिग्गज नेताओं में बंगारू लक्ष्मण, पुरुषोत्तम रूपाला, संजय सिंह अमेठी, राज बब्बर, अरुण चतुर्वेदी, संजय निरुपम, नीरज डांगी आदि सांसदों जैसे महत्वपूर्ण लोग भी पूर्व में शिरकत कर चुके हैं।

हमको तुम गुणवान बना दो प्रभु

हे प्रभु अज्ञान मिटा दो
हमको तुम गुणवान बना दो
नित उठ करूँ तुम्हारा वंदन
मन का सब अभिमान मिटा दो

छोटे बड़े का करूँ मैं आदर
मानवता का पाठ पढ़ा दो
गुरुजनों का चरण पखारुँ
गुरु गुरु की पहचान करा दो

मम्मी पापा की करूँ मैं सेवा
बस इतना संस्कार सिखा दो
पनप रहा हूँ माडन युग में
कर्म का शुद्ध बिचार बता दो

देश हित में रहूँ तत्पर
नया नया विज्ञान बता दो
हे प्रभु अज्ञान मिटा दो
हमको तुम गुणवान बना दो।

विश्व प्रसिद्ध समस्त जैन पंथों की एकमात्र पत्रिका
जिनागम
परिवार की तरफ से सभी जिन धर्मावलंबियों से
उत्तम क्षमा, मिच्छामी दुक्कड़म, खमत खामणा
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व संपादक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मैं भारत हूं फाउंडेशन
भारत को केवल 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं
एक राष्ट्र एक नाम 'भारत'
जय भारत

दशलक्षण व्रत का पालन कर अपनी तपस्या पूर्ण करने पर खूब-खूब अनुमोदना
रजत पाटनी
(सुपौत्र श्री पदमचंद - शांति देवी पाटनी
सुपुत्र श्री संजय - शालिनी पाटनी)

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

अजय जैन
अध्यक्ष भारतीय जैन संघटना सूरत
सीकर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९५१२३३१३३९

अजय जी 'क्षमा पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मनुष्य गलतियों का पुतला है, वह प्रतिदिन जाने-अनजाने कई गलतियां करता है, जिससे सामने वाले को तकलीफ पहुंचती है, 'क्षमा' के माध्यम से वह अपनी गलतियों को सुधारता है, क्षमा मांगना और 'क्षमा' प्रदान करना दोनों ही अपने आप में श्रेष्ठ है, इस पर्व के माध्यम से जैन समाज वर्ष भर में हुई अपनी गलतियों के लिए 'क्षमा' याचना करता है और 'क्षमा' प्रदान करता है, जिससे आपसी बैर या द्वेष की भावना को समाप्त किया जा सके और परस्पर सौहार्द बना रहे, मन को भी शांति प्राप्त होती है इसीलिए, 'क्षमा' का विशेष महत्व है। मनुष्य को प्रतिदिन नियमित रूप से भी यह कार्य करना चाहिए।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' समाज की सबसे बड़ी जरूरत है और यदि प्रयास किया जाए तो यह अवश्य संभव हो सकता है, धर्म एक सामाजिक व्यवस्था है, सबको अपनी-अपनी जिम्मेदारियों के अनुरूप कार्य करना चाहिए, तभी यह व्यवस्था बनी रहती है, इस तरह जैन धर्म में पंथ भी एक सामाजिक व्यवस्था है, और इससे भी ज्यादा जरूरी है कि इंसान का इंसान के प्रति दया भाव हो, एक दूसरे के दुख दर्द में सहारा बने सहयोग प्रदान करें यह भावना होना बहुत जरूरी है।

भारत युवाओं का देश है, यदि युवा वर्ग किसी बात को ठान लें, तो वह उसे अवश्य ही पूर्ण करने का सामर्थ्य रखता है। जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है जो नियम बनाए गए हैं, वैज्ञानिकता पर आधारित है, यदि इस बात को युवा वर्ग को वैज्ञानिक तरीके से समझाया जाए तो युवा वर्ग अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़ा रहेगा। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं, अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए।

अजय जी मूलतः राजस्थान 'सीकर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप सूरत में बसे हैं और टेक्सटाइल के क्षेत्र में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, भारतीय जैन संघटना सूरत चैप्टर के अध्यक्ष हैं, जीतो व श्री दिगम्बर जैन समाज सूरत से जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

अनिल कुमार सोनावत
जिला उपाध्यक्ष छत्तीसगढ़ चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स
भिनासर निवासी-छत्तीसगढ़ प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९१६५२९१२३४

अनिल जी 'क्षमा' पर्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जैन धर्म में 'क्षमा' पर्व का बहुत ही विशेष महत्व है, यह प्रतिक्रमण का समय होता है, जाने-अनजाने हमारे द्वारा हुई गलतियों के लिए और यदि हमारे मन, वचन, कार्यों से किसी को दुख पहुंचा हो उसके लिए हम क्षमा याचना करते हैं और 'क्षमा' प्रदान करते हैं, यह पर्व आत्मशुद्धि और मन में उठे बैर भाव को समाप्त करने का समय है, इसीलिए जैन धर्म में क्षमा को विशेष स्थान दिया गया है, कहते हैं ना 'क्षमा वीरस्य भूषणम्', आज के परिपेक्ष में इसकी हमें नितांत आवश्यकता है, इसके माध्यम से ही समाज में सद्भाव स्थापित किया जा सकता है, इसीलिए 'क्षमा' पर्व का विशेष महत्व है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जिन धर्म सबसे प्राचीन होने के साथ सबसे वैज्ञानिक धर्म भी माना जाता है, जैन धर्म के जितने भी सिद्धांत है, वह वैज्ञानिकता पर ही आधारित है, इन सबके बावजूद आज हमारा समाज पंथों में बंटा हुआ है, जिसके कारण हम अपने अस्तित्व को समाप्ति की ओर ले जा रहे हैं, अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के से दूर ही रहती है, उन्हें जोड़ना जरूरी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

अनिल जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'भिनासर' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान में संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप छत्तीसगढ़ के 'मनेन्द्रगढ़' में बसे है, यहां आप फार्मास्यूटिकल व्यवसीय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक व धार्मिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ के सदस्य हैं, छत्तीसगढ़ चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स के जिला उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

गिरीश बड़जात्या जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
इंदौर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२०२९७००४

गिरीश जी 'क्षमा पर्व' के महत्व का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'क्षमा' अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसका महत्व अनादि काल से रहा है और आगे भी रहेगा, यह शाश्वत है, 'क्षमा' एक ऐसा धर्म है, जिसके माध्यम से हम दुश्मन को भी अपना बना सकते हैं। परस्पर बैर भावना को समाप्त करने के लिए 'क्षमा' सर्वोत्तम मार्ग है, इसीलिए जैन धर्म में इसे पर्व के रूप में मनाया जाता है, ताकि इसका महत्व हमेशा बना रहे।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता हर समाज में जरूरी होती है, जैन समाज में एकता की बहुत कमी है, क्योंकि समाज कई पंथो में बंटा हुआ है, इस अनेकता के कारण समाज को कई नुकसान उठाने पड़ रहे हैं, हमारे धर्म समाज का अस्तित्व खतरे में आ गया है, जैन समाज बहुत ही अल्पसंख्यक है और समाज में दिखावा और आडंबर अधिक हो गया है, पदों के लिए राजनीति होने लगी है, लोग अपने कर्म से विमुख हो रहे हैं, उनके लिए आज भोजन खान और पूजा मात्र रह गया है, इसका वास्तविक अर्थ समाप्त हो चला है, अपने धर्म समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर ही रहना चाहती है, इसका कारण समाज में फैला आडम्बर और रूढ़िवादी सिद्धांत है, युवाओं को जोड़ना है तो उन्हें आज के परिपेक्ष के अनुरूप धर्म व समाज से जोड़ना होगा, तभी उनका रुझान अपने धर्म और समाज के ओर बढ़ेगा। मंदिर से ज्यादा बड़े स्कूल, कॉलेज, हॉस्टल बनाए जाने चहिए, मंदिर सिर्फ सिम्बोलीक हो।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम एक पहचान रहना चाहिए 'भारत'!

गिरीश जी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के निवासी थे। आपका परिवार 'इंदौर' में कई पीढ़ियों से बसा है, आपका जन्म 'इंदौर' व सम्पूर्ण शिक्षा 'नीमच' में संपन्न हुई है, पिछले २५ सालों से आप मुंबई में बसे हैं और केमिकल इंडस्ट्रीज से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री मुंबई दिगम्बर जैन सेवा संघ के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

जीनेश सेठी
व्यवसायी व समाजसेवी
कोटा निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४९३३८६५

जीनेश जी अपनी 'क्षमा पर्व' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'क्षमा' हर देश काल में महत्वपूर्ण रही है, 'क्षमा वीरस्य भूषणम्', यह कहावत पूर्णतया सार्थक है। 'क्षमा' वीरों का आभूषण है, 'क्षमा' प्रदान करने वाला और 'क्षमा' मांगने वाला बहुत ही सहनशील होता है, 'क्षमा' मांगने और 'क्षमा' देने के लिए व्यक्ति को अपने मन में द्वेष भावना को दूर करना होगा, तभी वास्तविक रूप से हम 'क्षमा' मांग सकते हैं या 'क्षमा' दे सकते हैं, तभी इसका महत्व बना रहेगा और आज के परिपेक्ष में इसकी समाज को नितांत आवश्यकता है, हमारे यहां कोटा में दिगम्बर जैन मंदिर में प्रातः पूजा अर्चना, शांति धारा होती है और दशलक्षण पर्व के अवसर पर सामूहिक रूप से समाज का 'क्षमा पर्व' कार्यक्रम होता है, वर्तमान में हमारे यहां विभाश्री माताजी और प्रज्ञासागर जी कई पिच्छियों के साथ विराजमान हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' समाज के लिए बहुत जरूरी है, जैन समाज आज बहुत ही अल्पसंख्यक हो रहा है, अपने धर्म समाज के अस्तित्व को बचाने के लिए समाज में एकता होना बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी को मिलकर भरसक प्रयास करना होगा और विशेष कर हमारे गुरु भगवंतों को आगे आना होगा, तभी यह कार्य संभव हो सकता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से जुड़ी है, जिन युवाओं को मुनि महाराज का संगत प्राप्त होता है, वह युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से अवश्य जुड़े रहते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से एक देश-एक नाम-एक संविधान का कानून अपनाना चाहिए।

जीनेश जी राजस्थान स्थित 'कोटा' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप फार्मास्यूटिकल डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में सक्रिय रहते हैं। जैन सोशल ग्रुप के उपाध्यक्ष रहे हैं, आपने वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य हैं, दिगम्बर जैन महासमिति के उपाध्यक्ष के रूप में भी अपनी भूमिका निभाई है। जय भारत!

-जिनागम

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC

www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,

Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100

Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com

Web: www.intensivefiscal.com

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञजी

स्व. भंवरलालजी कोठारी

कोठारी परीवार

जसोल - पाली मारवाड - मुम्बई

Kothari Group of Companies

AANTARIK FILMS PVT. LTD.

EURO World's Finest Olive Oil Product of Spain

KOTHARI INFRASTRUCTURE

Kro Hari Spain Single Destination Globe Satisfaction

BOLLYWOOD MIRROR GLOBAL VISION

RANG JO DIL CHAHE KOTHARI FABRICS TWO x TWO RUBIA

Ganpat Kothari - Chairman

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

'मिच्छामी दुक्कड़म' का अर्थ

कृपया मुझे क्षमा करें, क्या अपने परिवार, रिश्तेदारों और दोस्तों से क्षमा मांगना अच्छा नहीं है? यह बहुत महत्वपूर्ण होता है कि सभी अपने नाजुक रिश्तों को सुधारें और नकारात्मक संबंधों के रिश्तों को साफ रखें और घृणा से दूर रहें।

दरअसल, 'मिच्छामी दुक्कड़म' एक सामुदायिक तरीके से व्यक्तिगत माफी की औपचारिकता है, यह व्यक्तिगत क्षमा की तुलना में मानवीय करुणा को बढ़ाने का एक माध्यम है, इसमें एक संपूर्ण समुदाय शामिल है, एक संपूर्ण समाज, माफी वास्तव में एक सबसे महत्वपूर्ण मानव मूल्य है। यह मानव जाति को उनकी पिछली गलतियों को सुधारने की अनुमति/मौका देता है और मानवता को सबक सिखाता है।

माफी मांगने में शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं होती, जब कोई व्यक्ति क्षमा मांगें तो उसे माफ़ कर देना चाहिए।

'मिच्छामी दुक्कड़म' क्या है?

मिच्छामी का अर्थ निरर्थक (क्षमा) होता है और दुक्कड़म (दुश्क्रूट) का मतलब बुरा कर्म है, इसलिए 'मिच्छामी दुक्कड़म' का अनुवाद करने का अर्थ है मेरे दुष्ट कर्मों या बुरे कार्यों के लिए क्षमा करें। जैन परिवारों में पैदा हुए लोग इसके पीछे अर्थ और विषय से पूर्ण रूप से परिचित होते हैं।

'मिच्छामी दुक्कड़म' क्यों कहते हैं?

अगर हम अपने आपको प्रतिबिंबित करते हैं तो हम महसूस करेंगे कि हमारा मन लगातार व्यस्त है या तो हमारे बारे में सोच रहा है जो हमारे पास हो सकता है या दुनिया के दूसरे छोर तक, शारीरिक गतिविधियों से बात कर सकता है, यह सोच, हमारे शब्द या हमारी शारीरिक गतिविधियां, हमारी खुशी, दुःख, क्रोध, लालच, ईर्ष्या और अहंकार आदि का प्रतिबिंब होता है और हम उन पर प्रतिक्रिया करते हैं, हम अपनी आत्मा के लिए विभिन्न प्रकार के नए कर्मों को आकर्षित करते हैं।

'मिच्छामी दुक्कड़म' कह करें प्रायश्चित

'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर मांगेंगे क्षमा...

संवत्सरी : क्षमा, अहिंसा और मैत्री का पर्व

क्षमा, अहिंसा और मैत्री का पर्व है संवत्सरी। संवत्सरी पर्व पर जैन धर्मावलंबी जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए एक-दूसरे से क्षमा मांगते हैं। गौरतलब है कि जैन धर्म के श्वेताम्बर पंथ में पर्युषण पर्व संपन्न पर क्षमावाणी दिवस मनाया जाता है।

जैन धर्म की परंपरा के अनुसार पर्युषण पर्व के अंतिम दिन क्षमावाणी दिवस पर सभी एक-दूसरे से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर क्षमा मांगते हैं, साथ ही यह भी कहा जाता है कि मैंने मन, वचन, काया से जाने-अनजाने में आपका दिल दुखाया हो तो मैं हाथ जोड़कर आपसे क्षमा मांगता हूं।

जैन धर्म के अनुसार 'मिच्छामी' का भाव क्षमा करने और 'दुक्कड़म' का अर्थ गलतियों से है अर्थात् मेरे द्वारा जाने-अनजाने में की गईं गलतियों के लिए मुझे क्षमा कीजिए।

'जिनागम' के अनुसार- क्षमापना से चित्त में आह्लाद का भाव पैदा होता है और आह्लाद भावयुक्त व्यक्ति मैत्री भाव उत्पन्न कर लेता है और मैत्री भाव प्राप्त होने पर व्यक्ति भाव विशुद्धि कर निर्भय हो जाता है, जीवन में अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क होता है तो कटुता भी वर्ष भर के दौरान आ सकती है, व्यक्ति को कटुता आने पर उसे तुरंत ही मन से साफ कर लेनी चाहिए, संवत्सरी पर्व पर अवश्य ही साफ कर लेना चाहिए।

'मिच्छामी दुक्कड़म' प्राकृत भाषा का शब्द है, प्राकृत भाषा में जैन ग्रंथों की रचना हुई है। पर्युषण महापर्व जैन धर्मावलंबियों में आत्मशुद्धि का पर्व है, इस तरह पर्युषण पर्व आत्मशुद्धि के साथ मनोमालिन्य दूर करने का सुअवसर प्रदान करने वाला महापर्व है।

इस दौरान लोग पूजा-अर्चना, आरती, समागम, त्याग-तपस्या, उपवास आदि में अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं, इस पर्व का आखिरी दिन 'क्षमावाणी पर्व' के रूप में मनाया जाता है, जिसमें हर किसी से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर क्षमा मांगते हैं। पर्युषण पर्व के आखिरी दिन 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहने की परंपरा है, हर छोटे-बड़े से 'मिच्छामी दुक्कड़म' कहकर क्षमा मांगते हैं।

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

श्री १००८ मूल नायक मनोकामना पूर्ति पार्श्वनाथ भगवान

समस्त ट्रस्टीगण

श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन देहेरासर ट्रस्ट,
२१६, गुलालवाड़ी , किका स्ट्रीट,मुंबई ४००००२.

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Vikrant Patni
Manish patni
Nitin jain

Ashish jain
Chirag jain
Sumit nigotia

Ashi Diamond

Resi.: Sundarban Off Link Road., 502, A Wing, Om Apartment, Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053

Off. : FE 3013, Bharat Diamond, Bkc Road, Bandra Kurla Complex-Bandra East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400051
email: vikrantpatni@yahoo.in
Mob. : 9322341847

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय भिक्षु जय तुलसी जय महावीर

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।
सभी जीवों से बारम्बार खमत-खामणा

आचार्य श्री महाश्रमणजी

Bachhraj Dugar

Mob.: 9820590968

B 7/605, Skyway, Shastri Nagar, Lokhandwala Complex, Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat 400053

विगत वर्ष में जाने अनजाने में हमारी कोई भूल से आपके कोमल दिल को ठेस लगी हो तो मन, वचन, काया से

उत्तम क्षमा

सबसे क्षमा , सबको क्षमा

- विजय कुमार जैन

राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री	:	भारतीय जैन मिलन
अध्यक्ष	:	जैन मिलन, वाराणसी
उपाध्यक्ष	:	श्री भदैनी जी दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र, वाराणसी (तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी की जन्मस्थली)
		श्री चन्द्रावती जी दिगम्बर जैन तीर्थ, वाराणसी (तीर्थंकर चन्द्रप्रभु जी की जन्मस्थली)
व्यवस्थापक	:	श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी
कार्यकारिणि सदस्य	:	श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन शोध संस्थान, नरिया, वाराणसी
सदस्य	:	श्री दिगम्बर जैन समाज, काशी

जैन एजेन्सीज

17 ए, नील काटेज, मलदहिया, वाराणसी-221002
Email : jainagencies3@gmail.com
Mob : 9415225395

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

क्षमापना

हे भगवान! मुझसे बहुत भूल हुयी, मैंने आपके अमूल्य वचनों को ध्यान (लक्ष) में नहीं लिया, आपके कहे हुए अनुपम तत्वों पर मैंने विचार नहीं किया, आपके प्रणीत किए हुए उत्तम शील का सेवन नहीं किया, आपकी कही हुई दया, शांति, क्षमा और पवित्रता को मैंने ही पहचाना।

हे भगवान! मैं भूला, भटका, घूमा-फिरा और अनंत संसार की विडम्बना में पड़ा हूँ, मैं पापी हूँ, मैं बहुत मदोन्मत्त और कर्मरज से मलिन हूँ। हे परमात्मन्! आपके कहे हुए तत्वों के बिना मेरा मोक्ष नहीं, मैं निरंतर प्रपंच में पड़ा रहता हूँ, अज्ञान से अंध हुआ हूँ, मुझमें विवेकशक्ति नहीं है, मैं मूढ़ हूँ, मैं निराश्रित हूँ, अनाथ हूँ।

निरागी परमात्मन्! मैं अब आपकी, आपके धर्म की और आपके मुनियों की शरण लेता हूँ, मेरे अपराधों का क्षय हो कर मैं उन सब पापों से मुक्त होऊं यह मेरी अभिलाषा है, पूर्वकृत पापों का मैं अब पश्चाताप करता हूँ।

ज्यों-ज्यों मैं सूक्ष्म विचार से गहरा उतरता हूँ त्यों-त्यों आपके तत्वों के चमत्कार मेरे स्वरूप का प्रकाश करते हैं, आप निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद स्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी और त्रैलोक्य प्रकाशक हैं, मैं मात्र अपने हित के लिए आपकी साक्षी में क्षमा चाहता हूँ, एक पल भी आपके कहे हुए तत्वों की शंका ना हो, आपके बताए हुए मार्ग में अहोरात्र में रहूं, यही मेरी आकांक्षा और वृत्ति हो।

हे सर्वज्ञ! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ? आपसे कुछ अज्ञात नहीं है, मात्र पश्चाताप से मैं कर्मजन्य पाप की क्षमा चाहता हूँ।

मिच्छामी दुक्कड़म समस्त आचार्य-आर्यिका, साधु-साध्वी, मुनि-क्षुल्लक, श्रावक-श्राविकाओं से हुई मंदबुद्धि के कारण ज्ञात-अज्ञात भावों में हुई भूल-चूक के लिए **उत्तम क्षमा**

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी' bijayjain.com

व भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in www.merarajasthan.co.in www.jinagam.co.in www.bijayjain.com

मैं भारत हूँ | मेरा राजस्थान | दिगम्बर श्वेताम्बर जिनागम | अंधेरी टाइम्स www.andheritimes.in

क्षमापना महापर्व क्या?

'पर्व'- उसे कहते हैं जो हमारे व्यवहार-संबंधों में पवित्रता बनाए रखे, जैसे रक्षा बंधन, होली आदि।

'महापर्व'- उसे कहते हैं जो सामूहिक रूप से धर्म-पवित्रता को उजागर करे, जैसे पर्यूषण, दस लक्षण पर्व आदि।

'क्षमापना महापर्व'- उसे कहते हैं जिसमें आलोचना पूर्वक हम अपने पाप की क्षमापना कर स्वयं को पवित्र करें, जैसे 'संवत्सरी', क्षमावाणी पर्व।

क्षमापना महापर्व की आवश्यकता

हमारी आत्मा का स्वरूप अनंत शुद्धता, अनंत शक्ति, अनंत शांति, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद, अनंत प्रेम, अनंत सत्य से भरा होने के पश्चात् भी हमें उसका अनुभव नहीं होता, हमारे अनंत गुणों के ऊपर अनंत पाप का आवरण आ गया है। वीतराग परमात्मा ने मूलत: १८ प्रकार के पाप बताए हैं परंतु जब वह पाप हमारे अनंत चेष्टाओं, मान्यताओं और आचरण से जुड़ते हैं तो अनंत हो जाते हैं, इन्हीं पाप की परतों को हटाने के लिए क्षमापना महापर्व का आयोजन किया जाता है, पाप की इन अठारह परतों को '१८ पापस्थानक' कहा जाता है। (८+१०)

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से उत्तम क्षमा

सुभाषचंद अमित कुमार बड़जात्या जैन
(मारोठ वाले)

M/S K. BADJATYAS

42A, Devi Path, Opp. Soni Hospital,
Jawaharlal Nehru Marg,
Jaipur, Rajasthan - 302017
Ph.: 0141-2313500 Mob. 09829017550

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से उत्तम क्षमा

Pradeep TaraChand Jain
Mob.: 9326044064

Rajesh TaraChand Jain
Mob.: 9376918505

Aayush Rajesh Jain
Mob.: 9512945100

V. S. SILKS
V. S. GARMENT
Dollar tex. (Surat)

Garments Manufacturing of mens Thobes, kurta pyzama , Arbi Jhubbha

Residence: 202 Shiv Shristi Residency, Adarsha Park Bhagwan Vasupujya Marg, Bhiwandi, Thane, Maharastra, Bharat- 421202,
Tel.: 02522-232957
Office.: 1240, Karivali Village Opp. Gram Panchayat Office
Email-vssilks2011@gmail.com

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा

B. K. JAIN

ACCUSPIRALS

AN ISO 9001:2000 Company

MFRS :
QUALITY GEARS
SPIRAL BEVEL, STRAIGHT BEVEL, WORM AND
WORM WHEELS, GEAR BOXES & PRECISION COMPONENTS

Works :
#D-424, 425, 10th main, 2nd Stage,
Peenya Industrial Estate, Bangalore, Karnataka, Bharat-560 058
दूरध्वनि : +91-80-28362280 / 28364749 / 51171539
Telefax: +91-80-28360814 / भ्रमणध्वनि : 09341232704
अणुडाक : contact@accuspirals.com
अंतरताना : www.accuspirals.com

Resi :
#320, 1st Block, 5th Cross,
R.T. Nagar, Bangalore
Karnataka, Bharat-560 032
दूरध्वनि : +91-80-23430115
Telefax: +91-80-23332964

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
www.mainbharathun.co.in

पाप की परिभाषा

प्राणातिपात पाप

(हिंसा = Violence)

हे प्रभु! मैंने अज्ञानवश, स्वार्थवश और प्रमादवश होकर एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों के प्रति प्राणातिपात पाप का सेवन इस प्रकार से किया है-

भाव हिंसा (मान्यता के स्तर पर हिंसा की)

- मुझमें अनंत शुद्धता व स्वतंत्रता होने के बावजूद

भी स्वयं को अशुद्ध और पराधीन माना।

(स्मरण रहे कि मान्यता की भूल के कारण ही आचरण की भूल होती है, इसलिए वही मूल भूल है)

द्रव्य हिंसा (आचरण के स्तर पर हिंसा की)

- दूसरे जीवों को बंधन में रखा
- दूसरे जीवों को मानसिक कष्ट (भय आदि) दिया
- दूसरे जीवों को वचन से कष्ट (ताना आदि) दिया
- दूसरे जीवों को काया से कष्ट भूखा रखना आदि) दिया
- दूसरे जीवों को मार डाला हो
- दूसरे जीवों को उनके अधिकार से वंचित रखा
- क्रोध वश किसी जीव के मर जाने की भावना की है
- परिस्थितिवश आत्महत्या का विचार इत्यादि...

हे भगवन्! आपकी साक्षी से आज के दिन हम क्षमापना-क्रम से करते हैं-

- हिंसा पाप की समझ
- हिंसा पाप की स्मृति
- हिंसा पाप की स्वीकृति
- हिंसा पाप की आलोचना
- हिंसा पाप का पश्चाताप
- हिंसा पाप की क्षमापना (प्रयोग विधि में प्रवेश)
- क्षमापना के पश्चात् संवेदन

(राहत, हल्कापन, आँसू, मैत्री, प्रमोद आदि एक या एक से अधिक गुणों का संवेदन)

अहो! वीतराग परमात्मन्! अनादिकल के इस परिभ्रमण में भाव हिंसा से द्रव्य हिंसा तक के सभी पाप मैंने मन से, वचन से, काया से किये हैं, करवाये हैं और करने वाले की प्रशंसा की है।

हे प्रभु! आज इस पाप का गहन रूप समझते हुए हृदय से आपसे याचना करते हैं कि अनादिकाल के वे सभी पाप निष्फल हों, निष्फल हों...

जो मैं जीव विराधिया, सेव्या प्राणातिपात।
नाथ आपकी साक्षी में, बारंबार धिक्कार ॥१॥
करी है जीव की हिंसा, किया है अत्याचार
नाथ आपकी साक्षी में,
'मिच्छामि दुक्कड़म्' उत्तम क्षमा आज ॥२॥

माया पाप

(कपट = Deciet)

हे प्रभु! मैंने अज्ञानवश और विपरीत बुद्धि के कारण माया पाप का सेवन इस प्रकार से किया है-

भाव माया (मान्यता के स्तर पर कपट करना)

- मेरी आत्मा की अनंत सरलता ही सुखरूप है

ऐसा नहीं माना और माया में सुख माना। स्मरण रहे कि मान्यता की भूल के कारण ही आचरण की भूल होती है, इसलिए वही मूल-भूल है।

द्रव्य माया (आचरण के स्तर पर कपट करना)

- जैसा सोचा वैसा बोला नहीं
- जैसा बोला वैसा किया नहीं
- जैसा किया वैसा बताया नहीं
- क्रोध के कारण चालाकी की
- मान पाने के लिए चालाकी की
- लोभ के कारण चालाकी की
- लोगों में अच्छा दिखने के लिए कपटपूर्ण व्यवहार किया
- ऊपर से मीठा-मीठा बोलकर दूसरे के अंदर से बात उगलवा लेना इत्यादि...

हे भगवन्! आपकी साक्षी से आज के दिन हम क्षमापना-क्रम में गहरे उतरते हैं-

- माया पाप की समझ
- माया पाप की स्मृति
- माया पाप की स्वीकृति
- माया पाप की आलोचना
- माया पाप का पश्चाताप
- माया पाप की क्षमापना (प्रयोग विधि में प्रवेश)
- क्षमापना के पश्चात् संवेदन

(राहत, हल्कापन, आँसू, मैत्री, प्रमोद आदि एक या एक से अधिक गुणों का संवेदन)

अहो! वीतराग परमात्मन्! अनादिकाल के इस परिभ्रमण में भाव माया से द्रव्य माया तक के सभी पाप मैंने मन से, वचन से, काया से किये हैं, करवाये हैं और करने वाले की प्रशंसा की है। हे प्रभु! आज इस पाप का गहन रूप समझते हुए हृदय से आपसे याचना करते हैं कि अनादिकाल के वे सभी पाप निष्फल हों, निष्फल हों...

क्षमापना महापर्व का क्रम

पाप की समझ
↓
पाप की स्मृति
↓
पाप का स्वीकार
↓
पाप की आलोचना
↓
पाप का पश्चाताप
↓
पाप की क्षमापना (प्रयोग विधि)
↓
आत्मिक संवेदन

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

क्षमा-सुख का सागर है

कागज की कश्ती में डुबकी लगा नहीं सकते
सूरज पर जाकर, घर अपना बना नहीं सकते
कितना कारगर है, कथन यह प्रभु महावीर का
कि क्षमा के बिन खुशी के फूल खिला नहीं सकते

क्षमा के बिन आध्यात्मज्योति जला नहीं सकते
क्षमा के बिन प्रेमामृत, हम पिला नहीं सकते
क्षमा के बिन हम कभी, मोक्ष पा नहीं सकते
क्षमा के बिन मानवता को जिला नहीं सकते

रत्नों के बिना गलाहार बेकार होता है
मानवता के बिना मानव बेकार होता है
सदा संघर्षों के बिना जुझने वाले मानव
क्षमा-दान के बिना तो जीवन भार होता है

बिना क्षमा के धर्म पताका फहरा नहीं सकते
बिना क्षमा के नेह का नाता, निभा नहीं सकते
क्षमा है वरदान समूचे जैन समाज का
बिन क्षमा के किसी को अपना बना नहीं सकते

जब सामने वाला आग बने, तुम बन जाना पानी
क्षमा सुख का सागर है, यह है महावीर की वाणी
निकल जाते हैं आंसु, कभी-कभी रोने से पहले
टूट जाते हैं ख्वाब, कभी-कभी सोने से पहले

क्षमा अनमोल तोहफा है, भूल सुधारने का
काश! कोई पा ले इसे, मृत्यु होने से पहले
'क्षमा वीरों का भूषण है' कथन महावीर का
क्षमा के बिन अहिंसा-पथ अपना नहीं सकते

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Jinesh Sethi
Mob : 94149 33865
Sethi Pharma Distributors
2-B-5 Vigyan Nagar, Kota, Rajasthan, Bharat-324005

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

समस्त जैन समाज के
गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय,
आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा

Pankaj Jain Family
FRAGOMATRIX
3rd Floor, Plot No.43, 6th N.S Road, JVPD, Juhu,
Vile Parle West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400058
email: hindoil@vsnl.com
Mob : 9987111110

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

क्षमा: जैन संस्कृति की विशेषता

क्रोध मनुष्य का पागलपन है। मनुष्य के अहंकार पर, जाने या अनजाने किसी भी कारण से चोट लगती है, तब क्रोध आ ही जाता है। जब क्रोध आता है, तब आंखें बन्द हो जाती हैं एवं मुख खुला रह जाता है। उस स्थिति उसे यह पता नहीं रहता कि मेरे सामने, मेरा बड़ा बुजुर्ग सम्बन्धी है या अन्य कोई सम्मानित व्यक्तित्व है। जब व्यक्ति क्रोध में अण्ट सण्ट बोलता है, तब उसे यह भी भान नहीं रहता कि मैं क्या बोल रहा हूं, क्यों बोल रहा हूं? एवं बोलना उचित है या अनुचित। स्वयं की गलती होने के बावजूद एवं बात को पूरा समझे बिना ही, अपने अधकरे कचरे ज्ञान या किसी सुनी-सुनाई या पूर्वाग्रह से व्यक्ति मामूली-सी बात से उबल जाता है। यह व्यक्ति की कमजोरी है, जिसे मिटाना अपेक्षित है। इसी क्रोध के वशीभूत, महान तपस्वी मुनि, खम्बे से टकराकर मृत्यु को प्राप्त हुए एवं चण्ड कौशिक नामक भयंकर विषधर सर्प रूप में पैदा हुए, जिनका उद्धार भगवान महावीर की क्षमा से ही हुआ। देपावन ऋषि को अनायास आये क्रोध ने द्वारका नगरी को भष्म कर दिया। संगीत श्रमण में बाधा मानकर, विद्वान ब्राह्मण के कानों में गर्म-गर्म शीशा डलवाकर भावी तीर्थंकर ने एक बड़ा कर्मबन्धन कर लिया, जब वो अपनी ध्यान साधना कर रहे थे, तो उसी ब्राह्मण ने ग्वाले के रूप में उनके कानों में कीलें ठुकवाकर अपना बदला लिया। कहने का तात्पर्य यही है कि क्रोध भयंकर विष हैं, उसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में किसी न किसी रूप में, अगले भव में उसका बदला अवश्य चुकाना होगा। क्रोध, वासना, लालच, भय आदि दसों-बीसों मानवीय दुर्गुण हैं, जिनकी बहुलता से मनुष्य जीवन नारकीय गति की ओर जाता है, इन दुर्गुणों की वजह से मनुष्य अपने जीवन काल में बात बात पर अनर्थ, लड़ाई- व तनाव के कार्य करता रहता है। इन्हीं की वजह से जल में डूब मरना, विष खाकर मर जाना, गाड़ी के नीचे आकर मर जाना, फांसी पर लटक जाना, इन्हीं कमियों का दुष्परिणाम है, जिससे अपने स्वयं के जीवन को तो समाप्त करता ही है, अपने परिवार को भी भयंकर परेशानी, शोक व दुविधा में छोड़ जाता है। जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपने दिव्य वाणी में इसका समाधान दिया है कि वर्षा उच्च आचरण की साधना-आराधना करे। वैसे तो ऐसा आचरण तो प्रतिदिन ही होना चाहिये, परन्तु ४ मास के चातुर्मास काल में इस हेतु आराधना का विशेष निर्देश किया गया है। यदि इतना लम्बा समय भी आराधना सम्भव नहीं है तो चातुर्मास में निर्धारित १८ दिनों के बीच विशेष आराधना-उपासना का लक्ष्य बनाये। चातुर्मास शुरू होने के ५० दिन बाद यह समय आता है, जिसे पर्युषण काल कहते हैं। इसके अन्त में ५०वें दिन उपवास पौषध आदि रखकर विशेष उपासना करते हैं, जिसे सम्वत्सरी कहा जाता है।

जैन धर्म, दिगम्बर व श्वेताम्बर, विशेषत दो परम्पराओं में विभक्त है, एवं दिगम्बर परम्परा वाले इसे ५० दिन की समाप्ति पर १० दिन की आराधना करते हैं, जिसे दश लक्षण पर्व कहा जाता है। पर्युषण कहो या दशलक्षण दोनों का ही मुख्य उद्देश्य है कि इस काल में व्यक्ति अपने सभी प्रकार के मानवीय दुर्गुणों के शमन हेतु त्याग, तपस्या, मौन, ध्यान आदि की साधना-आराधना करते हुए अपने को शुद्ध स्वर्ण की तरह निखारे। अन्तिम दिन सम्वत्सरी की विशेष आराधना का होता है, जिसमें उपवास, पौषध आदि करना होता है। दूसरे दिन विशेष महत्व का है, जिसे 'खमत खामणा' दिवस कहा जाता है। उस दिन व्यक्ति अपने पूरे जीवन-काल में एवं विशेषतः पिछले एक वर्ष में जो भूलें व गलतियां की हैं, उन्हें स्मरण करता है। इसका सबसे बड़ा व शानदार कार्य है- 'खमत खामणा'। किसी से कोई गलत व्यवहार व अपराध किया है, कोई ऐसा दुर्व्यवहार किया है, उसके लिये हम उसे क्षमा कर देवें। तात्पर्य स्मृति में नहीं रखकर स्वयं का पूर्णतः शुद्ध सोने की तरह सौ टंच स्वर्ण बना लेवें।

सभी धर्म में इस रूप में कुछ उपक्रम हैं, परन्तु जैन धर्म के जैसा अन्य उपक्रम में कहीं नहीं मिलता, हम सभी को इस भावना को समझकर आध्यात्मिक उपासना करते हुए, ने जीवन को शुद्ध बनाकर पूर्णतः निखार लेवें, यही इस महान पर्व क्षमा-वाणी का उद्देश्य है।

-विजयराज सुराणा जैन

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप
आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना
1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJVO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं
वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि) | वसंत जैन (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

कर्नाटक कैलाश मानस सरोवर यात्रा संघ द्वारा हनुमंत नगर स्थित विवेकानंद शिक्षण संस्थान के सभागार में कर्नाटक कैलाश मानस सरोवर यात्रियों के लिए स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया, समारोह अध्यक्ष प्रभाकर आर एवं महेंद्र मुणोत ने पुष्प वृष्टि कर यात्रियों का स्वागत किया। यात्रियों ने कैलाश मानस सरोवर यात्रा के अनुभव साझा किये, आयोजकों ने २०२५ में नामांकन करने वाले यात्रियों को दिशा निर्देश दिए एवं कहा दृढ संकल्प एकाग्रता श्रद्धा एवं धन आपको कैलाश मानस सरोवर की यात्रा कराएगा, आयोजकों ने मुख्य अतिथि को सम्मानित किया।

गर्मी की छुट्टियों के बाद जब छात्र स्कूल जाना शुरू करते हैं और शैक्षणिक वर्ष शुरू होता है, तो शिक्षा विभाग उनके उत्साह और शारीरिक तंदुरुस्ती को बढ़ाने के लिए खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। दर्जनों स्कूलों की भागीदारी वाले संकुल स्तर पर आयोजित होने वाले इन खेलकूद प्रतियोगिताओं से बच्चों में शारीरिक गतिविधि के कारण एक नया उत्साह पैदा होता है और वे स्कूल आने के लिए आकर्षित होते हैं, ऐसी ही एक खेलकूद प्रतियोगिता (२१-०८-२०२५) हेसरघट्टा के निकट सोनेनहल्ली संकुल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता के समापन समारोह में, बेंगलुरु उत्तर क्षेत्र के चतुर्थ हेसरघट्टा स्थित सरकारी स्कूल के प्रांगण में आयोजित की गई। विजयनगर मारुति मेडिकल्स के गोसेवक महेंद्र मुणोत कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने बच्चों को प्रमाण पत्र, पदक और पट्टिकाएँ वितरित कीं, मंच पर बोलते हुए श्री मुनोत ने कहा कि 'खेल केवल हार-जीत का खेल नहीं है, यह एक ऐसी गतिविधि है जो शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ाती है और साथ ही एक ऐसा कार्य है जो आपसी मित्रता और सह-अस्तित्व को भी बढ़ाता है।' शिक्षा अधिकारी वेंकटचल और अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित थे।

भैरवेशवारा नगर नागरिकों द्वारा आयोजित गणेश उत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने भगवान गणेश के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं जरूरतमंद बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरित करते हुए अपने वक्तव्य में कहा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने भगवान गणेश को मंदिरों से चौराहे पर लाकर देशवासियों को संगठित करने का कार्य किया गया है, आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

हेच. आर. फाऊंडेशन द्वारा मागड़ी रोड विद्यारण्य नगर (चोलूरपाल्या) क्षेत्र में भाजपा नेता हेच. रविंद्र के नेतृत्व में रक्तदान शिविर, निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं जरूरतमंदों में साड़ियां एवं कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिससे सैकड़ो लोग लाभान्वित हुए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने फाउंडेशन के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डाला। आयोजकों ने मुणोत को सम्मानित किया। धन्यवाद

विनायक सामूहिक गणेश शोभा यात्रा एवं विसर्जन समिति चिकपेट द्वारा रविवार को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया । जिसमें ३० से भी ज्यादा संगठन गणेश प्रतिमाओं को लेकर पहुंचे । बरसात के बावजूद भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे । कार्यक्रम में बेंगलुरु केंद्र लोक सभा सांसद पी.सी मोहन, महेंद्र मुणोत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समिति के प्रमुख पूर्व पार्षद ए.एल. शिवकुमार ने अतिथियों का स्वागत किया । धन्यवाद

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से उत्तम क्षमा

Goverdhan Lal Paharia Mahavir Paharia

IndianOil Assam Oil

PEAK SERVICE STATION
Dealer: Indian Oil Corporation Ltd.

Dhankheti, Shillong, East Khasi Hills,
Meghalaya, Bharat- 793003

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Mahesh Jain
Mob: 9884191722

Siddhi Vinayak Logistics

S/R No.4, Shop No.2, Anand Nagar, A.B. Road, Gwaliar,
Madhya Pradesh, Bharat- 474012 Ph: 0751-4926221
Email: shreevinayaklogistics@gmail.com

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

HEMCHANDRA - MEENA JHANJHARI
Mob: 9826033179

Erawat Pharma Ltd.

12C/FA, SCHEME 94 Ring Road,
Near Pipliyahana Square, Indore, Madhya Pradesh- 462018
Ph: 0731- 6659100
Email: info@erawatgroup.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

समस्त जैन समाज के गुरू-भगवंत आचार्य-उपाध्याय, आर्यिका-साध्वी, श्रावक व श्राविकाओं से 'उत्तम क्षमा'

श्रीमान पदमचन्दजी श्रीमती शान्तिदेवी पाटनी
संजयकुमार-शालिनी, सुमित-रितिका, (पुत्र एवम् पुत्रवध)
रजत-सिमरन (पोत्र एवम् पोत्रवधु), प्रतिक्षा, दिशा, नव्या (पोत्री)
प्रतिभा-श्रवण सेठी, पूनम-निरेन पाण्ड्य(पुत्री एवम् जवाई)
तनिष, वीर, संचय (दोयता) याशी (दोयती)
एवं समस्त पाटनी परिवार
सिद्धर्थ रेजीडेन्सी, छत्रीबाड़ी, पल्टन बाजार, गुवाहाटी, आसाम, भारत

पदमचंद पाटनी जैन

सेठी सदन, मेघदूत सिनेमा के पास, तीसरा माला, पलटन बाजार, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१००१
दूरध्वनि :०३६१-२५१७९५७ भ्रमणध्वनि : ०९४३५५५१११९, ९८६२००९६११

सोहनी मोटर्स

(ए एम डी ऑफ टीवीएस मोटर को. लि. पुजा एन्क्लेव, धारापूर, चराईली, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१०१७

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

सिडको के बड़े बाबा जैन मंदिर में लाखों लोग महापर्व मनाते हैं

छत्रपति सभाजीनगर सिडको क्षेत्र के कलिकुंड पार्श्वनाथ सैतवाल दिगम्बर जैन मंदिर में, महोत्सव की शुरुआत हर सुबह ७:३० बजे आचार्य पवित्र सागर जी महाराज के शिष्य शिरोमणि प्रभावसागरजी महाराज की उपस्थिति में धर्म ध्वजारोहण के साथ हुई। ध्वजारोहण की शोभा व्यवसायी रविराज नारायणराव बुबाने और पूर्व नगरसेवक नितिन चित्ते ने निभाई, इस अवसर पर श्री भास्करराव तुलसीराम अन्नदाते, हेमंतकुमार शरदजी सिंगलकर, मंदिर अध्यक्ष अमोल मोगले, वर्धमान वाइकोस, नीलेश सावलकर, प्रकाश भाकरे, रवींद्र सांगोले, राजकुमार कुरकुटे, बाहुबली ढोंगड़े, दीपक दिकेकर, शेखर वाइकोस उपस्थित थे, इस महोत्सव में सौधर्म इंद्र श्रीमती मंगला दिगम्बर क्षीरसागर प्रति इंद्र श्रीमती अंजली प्रफुल्लजी दुरुगकर को सम्मान प्राप्त हुआ, इस महोत्सव में पंडित के रूप में विलास जोगी और पंडित प्रभाकर मौजूद थे। राजकुमार लिंगायत जीवनधर कोर्डे को संचालक और उनके सहायक के रूप में नियुक्त किया गया। संगीतकार आनंदजी जैन और उनके सहायक को इस महोत्सव के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

प्रतिदिन सुबह ७:३० बजे भगवान पार्श्वनाथ का पंचामृत से अभिषेक हो रहा है, सुबह ९ बजे मुनिश्री प्रभाव सागरजी महाराज मंगल प्रवचन दे रहे है, दोपहर ३ बजे मुनिश्री तत्वार्थ सूत्र का वाचन कर रहे है, शाम ६ बजे आचार्य भक्ति, सामूहिक दर्शन, पारायण, श्रावक प्रतिक्रमण, सामान्य, ठीक ७ बजे मंगल संगीतमय आरती हो रही है, रात ८ बजे दस धर्मों पर व्याख्यान और उसके बाद विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, महोत्सव के पूरे दस दिनों तक पंचामृत से अभिषेक करने का सौभाग्य श्रीमती दर्शना रविंद्र संघवी, श्रीमती दीपाली हेमंत सिंगलकर, श्रीमती मिनाक्षी संजयजी उदगीरकर, श्रीमती वर्षा स्वराजजी दलाल, संदीप सुरेश वाइकोस, श्रीमती संध्या अजीत गोसावी, श्रीमती हीराबाई अभय खुले, स्वप्निल अशोकजी अन्नदाते, श्रीमती शैलजा रविंद्र सांगोले, श्री संजय राजकुमार महाजन को मिला। २८ से ५ तारीख तक प्रतिदिन विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण ६ तारीख को होगा और महोत्सव का समापन ७ सितंबर को होगा। इस अवसर पर सुबह ७:३० बजे पार्श्वनाथ चौक से भगवान की शोभायात्रा, अभिषेक पूजा हुयी, अवसर पर हेमंत शरदजी सिंगलकर हरलकर द्वारा महाप्रसाद का आयोजन किया गया, मंदिर ट्रस्टी, चातुर्मास समिति, आचार्य श्री आर्यनंदी छात्रावास समिति, प्रगति महिला मंडल द्वारा सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होकर धार्मिक लाभ एवं पुण्य अर्जित किया गया।

दिगम्बर संप्रदाय का पर्युषण पर्व

धर्म यात्रा की इस कड़ी में हम आपको लेकर चलते हैं विभिन्न दिगम्बर जैन स्थलों पर, दिगम्बर जैन धर्मावलंबी भाद्रपद मास में पर्युषण पर्व मनाते हैं। ऋषि पंचमी (गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद) से पर्व की शुरुआत होती है और यह अगले दस दिनों तक चलता है, यह पर्व 'दस लक्षण' के नाम से भी जाना जाता है।

बैसे तो 'पर्युषण पर्व' दीपावली, ईद या क्रिसमस की तरह उल्लास-आनंद का त्योहार नहीं हैं, फिर भी इनका प्रभाव पूरे समाज में दिखाई देता है, इसी तरह का उल्लास विभिन्न दिगम्बर जैन मंदिरों में देखने को मिलता है, हजारों की संख्या में जैन धर्मावलंबी तीर्थंकर महावीर के दर्शन करने के लिए विशेष रूप से सजाए गए मंदिरों में उमड़ पड़ते हैं। पर्युषण पर्व मनाने का मूल उद्देश्य आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए विभिन्न सात्विक उपायों पर ध्यान केंद्रित करना होता है, पर्यावरण का शोधन इसके लिए वांछनीय माना जाता है, पर्युषण के दौरान पूजा, अर्चना, आरती, समागम, त्याग, तपस्या, उपवास में अधिक से अधिक समय व्यतीत करने तथा सांसारिक गतिविधियों से दूर रहने का प्रयास किया जाता है, संयम और विवेक के प्रयोग पर विशेष बल दिया जाता है।

पर्युषण के समापन पर क्षमापना या क्षमावाणी पर्व मनाया जाता है, इस दिन जैन धर्मावलंबी पूरे वर्ष में किए गए ऐसे कार्यों के लिए क्षमा माँगते हैं जिनसे किसी को उनके द्वारा जाने-अनजाने में दु:ख पहुँचा हो, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक बिजय कुमार जैन कहते हैं कि क्षमा माँगने वाले से ऊँचा स्थान क्षमा देने वाले का होता है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई
किसी भी प्रकार की भूल-चूक के लिए मिच्छामी दुक्कड़म

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

गत वर्ष हुई बोल-चाल व क्रिया द्वारा हुई
किसी भी प्रकार की भूल-चूक के लिए मिच्छामी दुक्कड़म

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी
जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

PAVAN KUMAR GADIA & FAMILY
Vimla Devi Jain
Pavan Kumar Jain- Madhu Jain
Rishabh Jain- Megha Jain
Master Hridham Jain
Andheri East, Mumbai
Email : pavankjain2001@yahoo.co.in

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी
जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

SHANTIVIJAY JEWELS LTD.
Office:- L-1, Trident Hotel, (Oberoi Towers), Nariman Point, Mumbai- 400 021
Tel: 022-2202 2310 Telefax: 022-2285 3873
Factory :- G-37, Gems & Jewellwry Complex No. 3, Seepz, Andheri East, Mumbai - 400096 Tel.: 022-4218 2222 E-mail: shantivijay@shantivijay.com
Residence:- 56, Iris Building, 14th Floor, Cuffe Parade, Mumbai - 400 005.
Tel.: 022-2218 6811/ 2218 3603

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री १००८ भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रानीला

परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द पूज्य ऐलाचार्य जी श्री श्रुतसागर जी हरियाणा प्रान्त के गुडगांवा, रोहतक, भिवानी व हिसार के क्षेत्र हजारों वर्ष पूर्व से जैन संस्कृति से प्रभावित रहे हैं। जैनागमों में यह उल्लेख भी मिलता है कि भगवान महावीर दक्षिण से विहार करते हुए इन क्षेत्रों से होकर ही उत्तर की ओर गए थे। हिन्दी लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल ने आज के हिसार नगर का नाम उस युग में ईषुकार नगर बताया है।

गत पांच-छः दशक में इन क्षेत्रों में भूगर्भ से प्राप्त शिलालेख एवं तीर्थंकरों की मूर्तियां समय-समय पर प्रकट होना जैन संस्कृति का प्रमाण है। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार प्राचीन काल में यह क्षेत्र जैन राजपूतों का क्षेत्र माना गया है तथा जैनाचार्यों के अनुसार इस क्षेत्र में सम्राट हर्षवर्द्धन के समय जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ, इसलिए भी यह क्षेत्र उस युग में जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

कालचक्र के प्रभाव से व मुगल शासकों के दमनकारी प्रवृत्ति के कारण जैन धर्मावलम्बियों ने अपने आराध्य देवताओं व तीर्थंकरों की मूर्तियां विभिन्न स्थानों पर भूगर्भ में रख दी, ताकि आतंकताईयों के हाथों नष्ट न होने पाएं और सुरक्षित रहें ऐसा इतिहासकारों का मानना है। इस श्रृंखला में भिवानी जिले के अन्तर्गत तहसील चरखी दादरी के जाट बाहुल्य गांव 'रानीला' में जहां जैन परिवार का एक भी घर नहीं था। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को दशहरा पर्व के शुभ दिवस पर १८ अक्तूबर १९९१ को अतिशय हुआ। गांव रानीला का रणजीत नाम का एक जाट किसान जब खेत में कस्सी से काम कर रहा था कि टीले की रेत में किसी कठोर वस्तु के दबे होने का उसे एहसास हुआ। सहसा ही उसके हाथ कांपने लगे, रणजीत ने अपने हाथों से कस्सी को छोड़कर रेत को कुरेदना प्रारम्भ किया ही था कि कुछ ही क्षणों में उसे एक सुन्दर पाषाण शिला दिखाई दी। शिला बाहर निकाली गई। वास्तव में यह शिला न होकर आद्यप्रणेता युग पुरूष तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा थी, परन्तु रणजीत को इस बात का ज्ञान न था। चंदन रंग की मनोहारी 28"x18" की भव्य इस शिला पर प्रथम तीर्थंकर १००८ आदिनाथ की अतिशय युक्त प्रतिमा तथा शिला के तीनों ओर अन्य तेइस तीर्थंकरों की अष्ट प्रतिहार्य एवं यक्ष-यक्षिणी सहित उत्कीर्ण तथा साथ ही माता चक्रेश्वरी देवी की अति सुन्दर कला युक्त प्रतिमा भी वहां से प्राप्त हुई।

प्रतिमा के चुम्बकीय प्रभाव से श्रद्धालु रानीला की ओर खिंचते चले गए। मनोकामनाएं पूरी होने लगी। जैन तथा अजैन सभी श्रद्धालु इस क्षेत्र से जुड़ते चले गए। फलस्वरूप इस निर्जन क्षेत्र का विकास होने लगा तथा कम समय में ही यहाँ एक विशाल भव्य त्रिकूट जिनालय का निर्माण हो गया।

धर्मानुरागी सुश्रावक सेठ बिशनस्वरूप जैन रोहतक के परिजनों द्वारा प्रदत्त भूमि पर पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री १०८ मुनिराज विद्यानन्द जी महाराज के पावन सानिध्य में ५ मई १९९२ को तत्कालीन जैन समाज के

शीर्षस्थ नेता साहू अशोक कुमार जी के कर कमलों द्वारा क्षेत्र परिसर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। नवनिर्मित भव्य त्रिकूट जिनालय में भगवान की प्रतिमा को विधिवत विराजमान करने हेतु २३ फरवरी से १ मार्च २००७ तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से पूज्य ऐलाचार्य मुनि श्री १०८ श्रुतसागर जी महाराज एवं पूज्य श्री १०५ आर्यिका **शेष पृष्ठ २६ पर...**

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

डॉ. राजकुमार हिराचंद शहा
डॉ. निकीता राजकुमार शहा
डॉ. रितेश, डॉ. रीमा शहा
श्रीमती शिप्रा, सौमिल आर. शहा

158, चिराग, शेर-ए पंजाब सोसायटी, महाकाली केव्हज रोड,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 093
दूरध्वनि - 022-022-35930361
क्लिनिक : 022-7400166631/32

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Dulichand Bokaria
Mob: 9435409629 / 9101901895 / 9435195585

OSWAL BROTHERS

Deals In: All Types of Household Kitchenware
Crockery & Home Appliances

14-A, Suraj Market, H.B. Road, Fancy Bazar,
Guwahati, Assam, Bharat-781001
अणुडाक: oswalbros14@gmail.com

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

उत्तम क्षमा

Dr. Pankaj J. Shah
Mrs. Shobha Shah
Dr. Pooja Shah
Dr. Prakshal Shah
Dr. Rahul Shah
Dr. Urvija Shah
Mob: 9820276897

Pooja Hospital

1st Floor, Opp. Gurunanak Petrol Pump,
Next To Adani Electricity Office, S.V. Road,
Goregaon West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400104
Off: 022-28791900/28791397/28763846

आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से

मिच्छामी दुक्कड़म

Basant Kumar Chopra Jain
Mob. 09631740589

Post. Naharia Bazar,
Dist. Madhubani, Bihar, Bharat- 847108

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ 24 से... स्वस्ति भूषण जी के सानिध्य में बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस भवन में जिनालय के प्रथम तल पर भव्य समवशरण व नीचे के तल पर विशाल सभागार है। ऊपर के तल पर समवशरण के साथ पश्चिम की ओर माता चक्रेश्वरी का मन्दिर तथा पूर्व की ओर चरण स्थल का निर्माण किया गया है। 'रानीला' का यह भव्य मन्दिर भारतवर्ष में कला, सुन्दरता एवं आधुनिकता की दृष्टि से अनूठा, आकर्षक व प्रभावशाली है।

भगवान की चमत्कारी प्रतिमा प्रकट होने से 'रानीला' गांव में ज्योति का संचार हुआ है तथा क्षेत्र में चमत्कारों का प्रभाव समय-समय पर देखने को मिलता रहता है। इस क्षेत्र का पानी पहले खारा होने के कारण पीने योग्य न था परन्तु तीर्थंकर के अतिशय से यहाँ एक भाग में मीठे पानी का स्त्रोत निकल आया। इसी प्रकार भक्तिभाव से श्रद्धापूर्वक दर्शन करने वालों की मनोकामनाएँ पूर्ण होने की भी अनेक घटनाएं प्रकाश में आई है। रणजीत नाम का किसान जिसके हाथों प्रतिमा प्रकट हुई, ने जैन धर्म के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प ले लिया। पूज्य श्री १०५ आर्यिका रत्न सृष्टि भूषण माता जी जब तनमय होकर भक्तामर का पाठ कर रही थीं, अनायास ही उनके हाथों में पवित्र गंदोदक आ गया, यह देख वहाँ उपस्थित सभी श्रद्धालु गदगद् होकर जय-जयकार करने लगे।

'रानीला' क्षेत्र में समय-समय पर जैन संत, मुनि, आर्यिकाएं, ऐलक, क्षुल्लक संघ सहित आते रहते हैं, इसके अतिरिक्त राजनेता, मन्त्री, उच्चन्यायालय के न्यायाधीश, मुख्य न्यायाधीश आदि महानुभाव दर्शनार्थ आते रहे हैं। समय-समय पर धार्मिक आयोजनों के अतिरिक्त स्वास्थ्य जांच शिविर, विकलांग शिविर, नेत्रों के आप्रेशन हेतु भी शिविर लगाए जाते हैं। अतिशय क्षेत्र पर प्रत्येक वर्ष २ अक्तूबर को वार्षिक मेला एवं रथ यात्रा का भव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में देश-विदेश से श्रद्धालु दर्शनार्थ आकर भाग लेते हैं। वृद्ध व असहाय व्यक्तियों के लिए एक सुंदर रैम्प भी बना है जो चिकित्सालय के रूप में स्थापित है।

हरियाणा सरकार ने अतिशय क्षेत्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर गांव रानीला को आदर्श गांव बनाए जाने की घोषणा की, इससे गांव का चहुंमुखी विकास होगा, इस समय मन्दिर परिसर में ७५ कमरे, सभी आवश्यक सुविधाओं सहित तथा आधुनिक भोजनालय का निर्माण हो चुका है। दर्शनार्थी बन्धुओं के ठहरने का समुचित प्रबन्ध है।

गांव 'रानीला' हरियाणा प्रान्त के जिला भिवानी की तहसील चरखी दादरी के अन्तर्गत है तथा क्षेत्र पक्की सड़क से जुड़ा हुआ है। देहली से ११० कि.मी. तथा रोहतक से ४४ कि.मी. वाया रोहतक, रोहतक भिवानी मार्ग पर कलानौर, खेरड़ी मोड़, बौंद व सांजरवास होते हुए रानीला पहुंचा जा सकता है। राजस्थान से वाया रेवाड़ी-झज्जर व अचीना मोड़ से या नारनौल, महेन्द्रगढ़, चरखीदादरी होते हुए तथा हिसार से १०५ कि.मी., हांसी-बुवानीखेड़ा-भिवानी होते हुए भिवानी-रोहतक मार्ग पर खेरड़ी-मोड़ से बौंद होते हुए 'रानीला' पहुंचा जा सकता है।

क्षमा यज्ञ है

अपनी आत्मा को विकार (राग-द्वेष ईर्ष्यादि) रहित एवम् ज्ञान स्वभाव से परिपूर्ण करना ही 'क्षमा' है, यदि कोई आकर हमें गालियाँ देने लगे तो उस समय पर क्रोध न करना सभी से 'क्षमा' माँगना, सभी के प्रति मैत्री एवम् समभाव रखना, बैर का परित्याग करना और स्वयं निर्विकारी बने रहना ही 'क्षमा' है। हमारे भारतवर्ष में 'क्षमा भाव' को धारण कर, हम सभी जैनी भाई-बहन पर्व के रुप में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते हैं।

'क्षमा' हमारे पारस्परिक वैमनस्य को समाप्त कर हमें निर्विकारी बने रहने की प्रेरणा देता है। जिस प्रकार हम 'क्षमापना' पर्व मनाते हैं, उसी तरह यह दिवस पूरे विश्व में अलग-अलग तिथियों एवम नामों से मनाया जाता है। पश्चिम एशिया के कोने में बसा एक छोटा सा नगर शक्तिशाली देश इजरायल, हर वर्ष १६ सितम्बर को 'प्रायश्चित दिवस' मनाते हैं। राष्ट्रीय दिवस के रूप में संस्थान आदि बंद रखते हैं, इस दिन सभी आत्मचिन्तन करते हैं तथा अपनी सामाजिक समस्याओं को हल करते हैं, इससे देशवासियों का नैतिक व राष्ट्रीय चरित्र ऊँचा होता है, शायद यही कारण है कि 'इजरायल' देश में व्यक्तिगत व सामाजिक विवाद बहुत कम होता है और उनका सामाजिक व राष्ट्रीय संगठन बहुत ही मजबूत है।

गुरु रामदास प्रतिदिन दो-तीन घर से भोजन मांग लिया करते और जो कुछ मिल जाता उसी को पूरे दिन का भोजन समझ लिया करते, एक दिन वे भोजन के लिए एक दरवाजे पर जाकर खड़े हुए और भिक्षा के लिए गृहस्वामिनी को आवाज लगाई, उस दिन घर की मालकिन किसी कारणवश क्रोध से भरी हुई थी, ऐसी स्थिति में गुरु की आवाज ने अग्नि में घी का काम किया। गुरु की आवाज सुनकर वह क्रोध से उबल पड़ी और जिस पोतने (सफाई करने वाला कपड़ा) से चौका धो रही थी, वही उनके मुख पर दे मारा। यह सब देख गुरु रामदास न तो दुःखी हुए और न ही रुष्ट हुए। मुस्कराते हुए उस पोतने को लेकर वह नदी के किनारे पहुँचे, वहाँ जाकर उन्होंने पहले स्नान किया, फिर उसने पोतने को खूब अच्छी तरह धोकर, सुखाकर घर ले आये और शाम को उस कपड़े से आरती के लिए बत्ती बनाकर भगवान से प्रार्थना की कि 'हे प्रभु! जिस तरह ये बत्तियाँ प्रकाश दे रही हैं, उसी तरह उस माता का हृदय भी प्रकाशमान रहे।'

'क्षमाशील' व्यक्ति अपने कष्टों को नहीं देखते, अपितु दूसरों की पीड़ा को देखकर द्रवित होकर, उनको भी दुःख से दूर रहने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन संतों के पावन चरणों में नमन वंदन अभिनंदन। क्षमावाणी के पावन पर्व पर हृदय से क्षमा भाव

परम पूज्य भारत गौरव
आचार्य श्री पुलकसागर जी महाराज

उत्तम क्षमा

पं. मधुकान्त जोशी
(व्यवस्थापक)

मेवाड़ केटर्स

म.नं. 21, सखवाल नगर (रंगकारखाना) राम मंदिर, रतलाम (म.प्र.)
मो. 9981888980, 9425355761, 07412-235232

Best Food | Super Vision | Catering Service

मंदिर, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव तथा अन्य मांगलिक उत्सवों पर शुद्ध सात्विक भोजन बनाने की सम्पूर्ण व्यवस्था

आत्म शुद्धि के के महापर्व पर्यूषण के
सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में
जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक
मन वचन और काय से यदि
आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया
हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

श्री नितिन भैयाजी, सीपुर

श्रद्धेय स्वामी देवेन्द्र भैयाजी

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

क्षमा

परम पूज्य आचार्य प्रवर १००८ श्री जवाहरलाल जी म.सा.के उवाच

श्रेयांस जिनन्द सुमर रे.....।

यह भगवान् श्रेयांसनाथजी की प्रार्थना है, 'संवत्सरी' का पर्व महान् दिवस है, 'श्वेताम्बर' पंथ के अनुसार यह पर्युषण पर्व का अन्तिम दिन होता है, आज चतुर्विध श्रीसंघ में असाधारण उत्साह है, इस पवित्र अवसर पर अपने जीवन को और अपने उत्साह को परमात्मा की प्रार्थना से ओत- प्रोत बना लेना चाहिए, जीवन में ऐसे अन्य क्षण बहुत ही कम, कभी-कभार मिलते हैं, सौभाग्य से अब ऐसे क्षण मिले हैं तो उन्हें खाली न जाने देने में ही चतुराई है, सुअवसर से लाभ उठा लेना प्रत्येक बुद्धिमान पुरुष का कर्त्तव्य है।

उत्साह के बिना कोई भी काम नहीं होता, कार्य साधारण हो और साधन प्रचुर मात्रा में मौजूद हों तब भी उत्साह के अभाव में यह यथावत् सम्पन्न नहीं होता, इसके विपरीत उत्साही पुरुष पर्याप्त साधनों के अभाव में भी अपने तीव्र उत्साह से प्रेरित होकर कठिन से कठिन कार्य भी साध लेता है, अतएव उत्साह का होना आवश्यक है और जब उत्साह है तो उसे सफल भी कर लेना चाहिए, ऐसा सुअवसर बार-बार नहीं मिलता, इस प्रार्थना में कहा गया है-

सुमर रे सुमर रे सुमर रे, श्रेयांस जिनन्द सुमर रे।

हे आत्मा ! तू परमात्मा को सुमर। तू और परमात्मा दो नहीं हो, एक हो, फिर भी तू अनादिकाल से अनेक योनियों में भटकता हुआ जन्म-मरण के कष्ट भोग रहा है और संसार की तुच्छ-अतितुच्छ वासनाओं में आनन्द मान रहा है, इस प्रकार तुमने अनन्त काल बिता दिया है, अब तू चेत जा, अब ऐसे ही जीवन मत गंवा, परमात्मा का स्मरण कर और तू तथा परमात्मा एक रूप हो जा।

इस महान और कल्याणमय साध्य की सिद्धि के लिए आज का दिन महत्त्वपूर्ण अवसर है, मैं आपको यह बतलाना चाहता हूँ कि पर्युषण पर्व क्या है?

सिद्धान्त में इस महापर्व को पर्युषण कल्प कहा गया है। इस पर्व की महिमा बतलाने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है, फिर भी इस सम्बन्ध में कुछ कहता हूँ:

जैन संघ में इस महापर्व का संस्कार इतना व्यापक है कि एक बच्चे पर भी इसका प्रभाव है। अन्य पर्वों पर तो बच्चों को खाने-पीने की भावना रहती है और वे ऐसी वस्तुए मांगते हैं, लेकिन इस धार्मिक पर्व पर उनकी मांग खाने की नहीं होती और वे भी उपवास करने की ही इच्छा करते हैं। मनुष्य के प्राण अन्नमय हैं, अतएव अन्न का त्याग करना सरल नहीं है। तीस-चालीस वर्ष के जवान और समझदार आदमी भी उपवास के नाम से डर जाते हैं, बहुत-से लोग कभी एकादशी आदि का उपवास करते भी हैं तो एकादशी, द्वादशी की दादी बन जाती है, लेकिन जैनों के इस उपवास में खाना-पीना कुछ भी नहीं होता, अगर कोई चाहे तो अधिक से अधिक अचित्त जल पी लेता है। अन्न का या किसी अन्य खाद्य पदार्थ का एक भी कण मुँह में डालने से उपवास भंग हो जाता है। उपवास इतना कठिन होने पर भी छोटी-छोटी लड़कियाँ भी उत्साह के साथ उपवास करने को तैयार हो जाती है, इस पर्व की यह स्वाभाविक विशेषता यह है। पर्युषण से मतलब उस काल से है, जब साधु किसी विशेष मर्यादा के साथ एक ही स्थान पर रहते हैं। साधु चार मास के सिवाय शेष आठ मास में विचरने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन पर्युषण अर्थात् चातुर्मास के बन्धन में रहते हैं। साधु मर्यादा के साथ पर्युषण काल जघन्य (छोटा) चार मास का और उत्कृष्ट छह मास का होता है, आषाढ़ी पूर्णिमा को चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करने के पश्चात् भगवान महावीर ने जिस प्रकार पर्युषण पर्व की आराधना की, उसी तरह गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी, जम्बू स्वामी आदि ने भी की, उनकी परम्परा में होने वाले अन्यान्य आचार्य भी उसी प्रकार साधना करते आये हैं। आचार्यों की इस परम्परा में पूर्वजों के कठिन संयम रुप तलवार की धार पर चलने वाले पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज हुए हैं। पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के पश्चात् पूज्य श्री शिवलालजी महाराज हुए, इन्होंने तैंतीस वर्ष तक एकान्तर तप किया, उनके बाद पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज का उदय हुआ, उनकी आकृति में इतना माधुर्य था कि उन्हें जो देखता, वही आकर्षित हो जाता था, उन जैसा तेजस्वी और उनकी सानी का पुरुष शायद ही कहीं दृष्टिगोचर हो, उन्होंने अपने उत्कृष्ट आचार और उपदेश द्वारा राजा-महाराजाओं पर तथा गोशमुहम्मद नवाब आदि पर भी अपना प्रभाव डाला था, तदनन्तर पूज्य श्री चौथमलजी महाराज आचार्य पद पर आसीन हुए, उन्होंने सम्प्रदाय में ज्ञान, ध्यान और आचार-विचार में बहुत उन्नति की। पूज्य श्री चौथमलजी महाराज के बाद पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज आचार्य हुए, शब्दों द्वारा उनका क्या परिचय दिया जाए, उनके तेज, प्रताप तथा उनकी गम्भीरता और मधुर वाणी का जिसने अनुभव किया, वह आयु भर उन्हें नहीं भूल सका। आज वे हमारे समक्ष नहीं हैं, तथापि उनके प्रति अगर हमारी श्रद्धा है तो वे समीप ही हैं, इन सब महापुरूषों का स्मरण करने से आत्मा में शक्ति और धर्म में रुचि उत्पन्न होती है। जिस प्रकार सुधर्मा स्वामी से लेकर पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के समय तक आषाढ़ी पक्खी से ५० दिन तक संवत्सरी होती आई है, उसी प्रकार आजकल भी होती है।

मित्रों! अपने अपराधों के लिए क्षमा प्रार्थना कीजिये, क्षमा में लोकोत्तर शक्ति मौजूद है। हजारों सिर कटने पर भी जो काम नहीं हो सकता, वह क्षमा का आश्रय लेने से सहज ही हो जाता है।

आज अपूर्व अवसर है, कौन जानता है कि जीवन में ऐसा धन्य दिवस कितनी बार आएगा अथवा आएगा ही नहीं? इसलिए इसका सदुपयोग करके अन्त:करण की मलिनता धो डालो, आत्मा को स्वच्छ स्फटिक के समान बना लो, ऐसा करने से आपका कल्याण होगा, क्षमा का सुदृढ़ कवच धारण कर निर्भय बन जाओ।

क्षमा-खड्गं करे यस्य, दुर्जन:किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्नि:स्वयमेवोपशाम्यति।।

जिस शुरवीर पुरूष के हाथ में क्षमा की तलवार है, उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। कौन नहीं जानता कि तृण-रहित स्थान में पड़ी आग आप ही ठंडी हो जाती है, यह बात स्मरण रखो और कल्याण के भागी बनो।

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

ashika

A well-diversified
Global Financial Conglomerate

GLOBAL FAMILY OFFICE SERVICES
Serving Global Family Offices for Wealth Creation

ASHIKA INVESTMENT MANAGERS PVT LTD (CAT III AIF)
- Ashika India Select Fund
- Ashika India Alpha Fund

INVESTMENT BANKING
Helping Businesses & Start-ups to raise funds via Debt & Equity

ASHIKA FAMILY OFFICE
We Invest as an Anchor Investor across Listed & Unlisted opportunities.

dhanush
Comprehensive Online Tech Platform for Investing

MERCHANT BANKING
Listings, De-listing, Mergers & Acquisitions for corporates

INSTITUTIONAL SERVICES DESK
100+ FIIs & DIIs trade on our platform

RETAIL BROKING, MTF & DISTRIBUTION SERVICES
500+ touchpoints across the country

Trusted
YOUR ^ PARTNER IN YOUR FINANCIAL WELL-BEING

Get in touch with us:
Mr. Shrey Shah
+91 9833498734
ss@ashikagroup.com
www.ashikagroup.com

Registered Office:
Trinity, 226/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata – 700 020
T: (033) 4010 2500
F: (033) 40033254
E: ashika@ashikagroup.com

Corporate Office:
Altimus, Level 35, Dr. G. M Bhosale Marg, Worli, Mumbai - 400 018
T: (022) 6372 0000
F: (022) 6611 1710
E: mumbai@ashikagroup.com

*Investment in Securities & Commodities Market are subject to market risks. Please read all the related documents carefully before investing. Clients must read Risk Disclosure Document (ROD) & Do's & Don't before investing.

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

संवस्तरी महापर्व एक साथ क्यों नही?

अति प्राचीन जैन धर्म के २४वें व अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर थे, उनके निर्वाण के ८-९ शताब्दी वर्षों के बाद जैन धर्म संघ दिगम्बर व श्वेताम्बर दो भागों में विभक्त हो गया, जिनकी मान्यताओं में थोड़ा-थोड़ा मतभेद था। दिगम्बर साधु पूर्णतः निर्वस्त्र रहते हैं, जबकि श्वेताम्बर, नाम के अनुरूप श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। भगवान महावीर विवाहित थे या अविवाहित आदि कुछ अन्य बातों को लेकर भी मतभेद उभरे, उसके बाद श्वेताम्बर मत भी धीरे-धीरे मंदिर मार्गी, स्थानकवासी व तेरापंथ, इन तीन मुख्य भागों में बंट गया, जिसमें तेरापंथ करीब २६० वर्ष पुराना सम्प्रदाय है, वैसे तो जैन धर्म में इन चार मुख्य सम्प्रदायों की गिनती होती है, परन्तु यह भी आपस में अनेकों उपसम्प्रदायों व गच्छों में विभक्त है, जिनकी संख्या भी सैकड़ों में हो सकती है एवं उनको अपना स्वतंत्र अस्तित्व यानि अलग आचार्य या प्रमुख होता है।

सभी श्वेताम्बर जैनों का एक सर्वमान्य पर्व होता है 'संवत्सरी', उस रोज जैन धर्म के अधिकांश अनुयायी पूर्ण उपवास करते हैं एवं उसके दूसरे दिन आपस में व अपने परिचितों से पूर्व वर्ष में की गई किसी भूल व गलती के लिये आपस में खमत-खामणा-मिच्छामी दुक्कड़म करते हैं। पूरे विश्व में इस तरह का पर्व कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता, जो मनुष्य की आत्मा को पवित्र व हल्का बनाने का उपक्रम है, परन्तु सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि सभी सम्प्रदाय इस तरह के अनूठे व अनुपम पर्व को किसी एक दिन नहीं मनाते, बल्कि भाद्र शुक्ला की चतुर्थी या पंचमी अलग-अलग दिनों में अपनी मान्यता के अनुसार तिथि निर्धारित करते हैं एवं मनाते हैं, यद्यपि महावीर जन्मकल्याणक की केन्द्र सरकार द्वारा सरकारी छुट्टी घोषित रहती है, परन्तु जैनों के इस महान पर्व का अलग-अलग दिनों में होने की वजह से एवं सभी एकमत नहीं होने से छुट्टी नहीं होती।

मान्यता के अनुसार आदिकाल में यह पृथ्वी पूर्णतः कठोर, शुष्क व गर्म थी, जैन चातुर्मास लगने के दिन यानि श्रावण कृष्णा एकम से ७-७ दिन तक सात किस्म की लगातार वर्षा हुई, जिससे यह भूमि स्निग्ध व नर्म पड़ी एवं उसके बाद उसमें खेती-बाड़ी व उपज शुरू हुई, यह एक मान्यता है एवं प्रति वर्ष उसके आधार पर संवत्सरी पर्व निर्धारित होता है।

श्वेताम्बर मत वाले अन्तिम सात दिन की वर्षा काल से अध्यात्म, व्रत आदि की विशेष आराधना करते हैं एवं उसे पर्युषण काल कहते हैं, कुछ श्वेताम्बर सम्प्रदाय, संवत्सरी पर्व अन्तिम दिन यानि ४९वें दिन मनाते हैं, तो कुछ उसकी समाप्ति के दूसरे दिन ५०वें दिन संवत्सरी व्रत मनाते हैं। दिगम्बर मत वाले यह ५९ दिन पूरा होने के उपरांत अपनी आराधना १० दिन करके, भाद्र शुक्ल १४ (अनन्त चतुर्दशी) को व्रत करके दश लक्षण पर्व मनाते हैं, इस तरह अपने-अपने मत व मान्यता के अनुसार २ या ३ दिन अलग-अलग संवत्सरी मनाने की पृष्ठभूमि हो जाती है।

तीर्थंकर महावीर का २५०० वां निर्वाण वर्ष सन् १९७४ में खूब ही धूमधाम से चारों सम्प्रदायों ने मिलकर मनाया था एवं उस समय के आचार्यों व श्रावकों के प्रयास से 'जैन एकता' काफी घनीभूत हुई थी। जैन ध्वज व जैनों के एक ग्रंथ ''समणसुंत'' का सर्वसम्मति से निर्मित हुआ, उस समय खूब प्रयास हुआ था कि 'संवत्सरी' के लिए एक तिथि का एक्य हो जाये, उसके बाद भी अनेकों बार, अनेक लोगों द्वारा यह सघन प्रयास होता रहा कि एक सर्वसम्मत तिथि निर्धारित हो जाये, लेकिन कोई भी प्रमुख अपनी ही निर्धारित मान्यता पर अड़ा रहता है, अतः समस्या जस की तस, क्योंकि सभी मान्यताओं के आधार व तर्क भी अपने-अपने हैं।

तीर्थंकर को मान्यता यह है कि ९९ चोट लगने पर भी धराशायी नहीं होने वाला मजबूत खम्बा १००वीं चोट पर कभी धड़मधाम गिर पड़ता है, अतः प्रयास चालू रखने में कोई सुविधा नहीं है।

समस्त जैन पंथों की विशिष्ट पत्रिका ''जिनागम'' इस हेतु वर्षों से प्रयास कर रही है। सन् २०१४ में दिल्ली में इस हेतु सघन प्रयास किया गया था, जब पत्रिका के सम्पादक श्री बिजय कुमार जैन की दिल्ली में अनेकों आचार्यों से मुलाकात हुई, इन प्रयासों का एक फल यह हुआ कि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के दो-तीन सम्प्रदायों ने तो यह तय कर लिया है कि हम चतुर्थी पंचमी का भेद नहीं रखते हुए सभी मिलकर एक ही तिथि को संवत्सरी मनायेंगे, यह एक अच्छा संकेत रहा, हम आशा करते हैं कि प्रभु की कृपा से कभी ऐसा दिन भी आयेगा, जब सभी जैनी एक ही दिन 'संवत्सरी-क्षमावाणी' की उपासना/आराधना करेंगे।

-विजयराज सुराणा
गाजियाबाद

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

FREE HOME DELIVERY

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

SINCE 1978

SATTVIK VERIFIED · QUALITY ASSURANCE · VEGETERIAN & JAIN

NAtural KhaO... Dilse Apnao...™

श्रेयस की पसंद

जैसे माँ बनाती है,
वैसा ही शुद्धता से भरा
- नाकोडा बिलौना घी

NAKODA GOLD
Bilona Desi Cow Ghee

NAKODA SILVER
Bilona Pure Ghee

89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585

GHEE AND OIL AVAILABLE IN ALL SIZES AT YOUR DOOR STEP

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR
K.B. Products Pvt. Ltd.
Customer Care: +91 9819475175 | Website: www.nakodagheetel.com | E-mail: info@gheetel.com
/nakodagheetel | An ISO 22000:2018 & HACCP Certified Company

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जब तक संवत्सरी मनाई जाती रहेगी तब तक देश सुरक्षित रहेगा

- युगद्रष्टा आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचंद्र जी म.सा.

तीर्थंकर महावीर ने संवत्सरी-क्षमापर्व को विश्व के लिए उपयोगी बतलाया है क्योंकि आज के रोज लाखों जैन उपवास करते हैं। झूठ, चोरी आदि पापों से दूर रहते हैं। व्यापार नहीं करते, बल्कि शाम को एक साथ निर्धारित समय पर लाखों जैन पूरे देश के कल्याण की कामना करते हैं, इस प्रकार की उत्कृष्ट शुभकामना से देश और विश्व का मानसिक पर्यावरण शुद्ध और मजबूत बनता है।

वैज्ञानिक वेकेस्टर एवं वासिलिएव कामिनिएव तथा वैज्ञानिक कडाल्फ का कहना है कि आपकी सोच का व्यापक प्रभाव होता है, ऐसी स्थिति में विश्वकल्याण के लिए जैनियों की संवत्सरी- दस लक्षण अत्यंत उपयोगी है।

ब्रेन ट्यूमर होने के दो मुख्य कारण हैं। एक तो किसी से झगड़ा होने पर होने वाला मानसिक तनाव, दूसरा मोबाइल से २४ घंटे में १ घंटे से अधिक देर तक बातचीत। दोनों ही खतरनाक है। पर्युषण के दिन जिस किसी से झगड़ा हुआ हो, उससे आगे चलकर क्षमापना कर लें। मन को शांत बनाएं और दिन में एक घंटे से अधिक मोबाइल से बात नहीं करें।

यूरीगेलर ने भी मानसिक सोच का प्रभाव बताया है। वुल्फमेसिंग ने तो मानसिक सोच के प्रभाव से उस समय के वीर स्टालिन तक को प्रभावित कर दिया था। महावीर स्वामी ने तो बंध, मोक्ष का मुख्य कारण ही मानसिक सोच को बतलाया है। अमेरिका की स्टेट बैंक का कैशियर लॉम्यूजॉन लोगों को पैसा देते वक्त और लेते वक्त 'मे गॉड ब्लेस यू' बोलता था, इसके कारण सामने वाले का मन सही हो जाता था।

पर्युषण पर्व का उदायन और चण्डप्रद्योत का ऐतिहासिक उदाहरण भी अनुमोदनीय व अनुकरणीय है। पापी से पापी आत्मा भी प्रायश्चित से तिर सकती है। साधु की हत्यारी महिला की काली साड़ी अपनी गलती स्वीकारने से सफेद हो जाती है।

जैन समाज में भी भारी मात्रा में एबॉर्शन हो रहे हैं, जहाँ अपनी संतान को जन्म देने से पहले ही अपने निजी स्वार्थों के कारण टुकड़े-टुकड़े करके बाहर निकाला जाता है, इस पर 'साइलेंट स्कीम' नाम की फिल्म भी बन चुकी है, जो जैनी ऐसा काम करवाते हैं, उनकी सामायिक, तपस्या, पूजा, भक्ति सब बेकार है। पहले जीव रक्षा, उसके बाद भक्ति।

एबॉर्शन नहीं कराने का संकल्प करें, साथ ही कोई भी एबॉर्शन करा रहा हो तो उसे रोकने के लिए प्रयास किया जाए और मौका पड़ने पर ऐसी एक संतान को बचाकर अपनी संतान बनाकर पालन किया जाए, ऐसा करने वाले का जीवन सफल हो जाता है।

जो हो गया सो हो गया, आगे से सभी को, सात कुव्यसन-जुआ, मांस, शराब, चोरी, शिकार, परस्त्रीगमन, वैश्यागमन आदि कुव्यसनों का त्याग करना है, जब तक इस धरती पर साधु-साध्वी घूमते रहेंगे, तब तक इस धरती का किसी भी तरह सर्वनाश नहीं हो सकता। तीर्थंकर महावीर ने अपने शासनकाल को २ हजार वर्ष तक चलना बतलाया है, जबकि अभी ढाई हजार वर्ष ही बीते हैं।

शांति की छाँव में जीना है तो संतों की शरण स्वीकार कीजिए।

क्रोध के नुकसान सौ-क्षमा के फायदे हजार

➢ गुस्सा इंसान को बर्बादी की तरफ ले जाता है, गुस्से में अगर नौकरी छोड़ोगे तो कैरियर बर्बाद होगा, मोबाइल तोड़ोगे तो धन बर्बाद होगा, परीक्षा न दोगे तो वर्ष बर्बाद होगा और पत्नी पर चिल्लाओगे तो रिश्ता बर्बाद होगा।

➢ गुस्सा हमारा मुंह खोल देता है, पर आंखें बंद कर देता है, पागलपन से शुरू होता है और प्रायश्चित पर पूरा होता है।

➢ गुस्सा करने से पहले सौ बार सोचिए, इससे लाभ नहीं, नुकसान ही होना है, जो काम रूमाल से निपट सकता है, भला उसके लिए रिवॉल्वर का उपयोग क्यों करें?

➢ गुस्सा आ भी जाए तब भी वाणी पर नियंत्रण रखने की कोशिश कीजिए, नहीं तो आप हानि उठाएगें, याद रखिए, मुंह से निकले बोल वापस कभी अंदर नहीं जा सकते।

➢ अगर गुस्सा करना ही है तो किसी को सुधारने के लिए कीजिए, अहंकार जताने और किसी को नीचा दिखाने के लिए गुस्सा मत कीजिए।

➢ क्रोध के वातावरण में भी मुस्कान को तवज्जो दीजिए। पत्नी कभी गुस्से में कहे कि मैं पीहर चली जाऊँगी तो बुरा मत मानिए, उसे शूटकेस तैयार करके दीजिए और कहिए- तू पीहर चली जा, मैं ससुराल चला जाऊँगा और बच्चों को ननिहाल भेज दूंगा, पर अपने रहेंगे तो साथ-साथ।

➢ गुस्से को जीतने के लिए क्रोध के वातावरण से दूर रहिए, मौन का अभ्यास बढ़ाइए, सकारात्मक व्यवहार कीजिए, विनोदी स्वभाव के मालिक बनिए, सप्ताह में एक दिन क्रोध का उपवास कीजिए।

➢ शांति के वातारण में आप क्रोध करते हैं, तो दुनिया की नजर में आप उग्रवादी कहलाएंगे, वहीं यदि क्रोध के वातावरण में भी आप शांत रहेंगे, तो आप किसी देवदूत की तरह पहचाने जाएंगे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

राम जन्मभूमि चातुर्मास देशनोक में विराजित

तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर १००८ श्री राम लाल जी म. सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर
श्री राजेश मुनि जी म. सा. एवम् समस्त चरित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन-अभिवंदन ।।

राम जन्मभूमि चातुर्मास
आचार्य श्री रामेश
2025 - देशनोक

क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है, क्षमा तपस्वियों का ब्रह्मा है,
क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है, क्षमा यज्ञ है और क्षमा मनाविग्रह है।

मिच्छामी दुक्कड़म

शांतिलाल-बिमला देवी, संजय-नीलम, अजय-ज्योति, तुषार-साक्षी, प्रजय, मिराया,ध्रुव एवं समस्त सांड परिवार

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA SHAND GROUP SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

SINCE 1977

FIRST IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IAPMO
LEAD FREE
UV STABILIZED
IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149
cftri CERTIFIED
LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आप सामर्थ्यवान हो और सामने वाला हीन है उसने अक्षम्य अपराध किया है फिर भी उसको क्षमा करना ही पर्युषण पर्व की सच्ची आराधना है-

पर्युषण पर्व क्षमा का प्रतीक है, किसी भी समस्या का हल क्षमा से हो सकता है जबकि क्रोध से समस्या बढ़ेगी ही, यूं तो संसार में आये दिन त्योहार आते रहते हैं लेकिन 'पर्युषण पर्व' लोकोत्तर पर्व है, जिसमें व्यक्ति सारे सांसारिक सुखों का त्याग करके, पांच इन्द्रियों पर नियंत्रण करता है। भूखा रहकर उपवास करता है, शरीर के सुख को छोड़कर आत्मा के सुख के लिए प्रयासरत हो जाता है, उक्त विचार प्रखरवक्ता पूज्य गुरुदेव श्री गुलाबमुनिजी महाराज साहब ने करही के अणु नगर स्थित स्थानक भवन में व्यक्त किये। गुरुदेव ने फरमाया कि अन्य त्योहार लौकिक होते है जो भय, विस्मय और प्रलोभन के कारण मनाए जाते हैं।

पर्युषण कैसे मनाना- पहला क्षमा याचना करना और दूसरा क्षमा देना। 'मिच्छामि दुक्कड़म' भूल हो तो भी दे सकते हैं और नहीं हो तो भी दे सकते हैं, यह एक तरफा है, इसका अर्थ हुआ मेरे द्वारा किया गया पाप मिथ्या हो जाये, जबकि 'खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु में' यानी मैं क्षमा चाहता हूँ और क्षमा देता हूं। कदाचित अपने व्यवहार से सामने वाले का मन दुखा हो, उसके हृदय को ठेस पहुँची हो, किसी

बात से दुख पहुँचा हो तो उससे क्षमा याचना करनी ही चाहिए, सामने वाला तुम्हें क्षमा करे या नहीं, वो तुम्हें क्षमा दे या नहीं उस पर ध्यान मत देना, तुम हृदय से क्षमा याचना कर लो तो खुद हल्के हो जाओगे और तुम्हारे कर्म बन्धन नहीं होंगे और भव सुधर जाएगा, सामने वाला जो भी करे उसके कर्म उसके साथ, उसके चक्कर में तुम क्यों अपना भव भ्रमण बढा रहे हो, क्षमा किसे देना, जिसने आपका अनादर किया, आपका अपमान किया, उसे क्षमा देना। आपने सामने वाले कि खूब मदद की, सेवा की, साता पहुँचाई और सहयोग दिया फिर भी यदि वो आपको बुरा बोले, गलत बोले तो भी उसको क्षमा करना ही वीरता है। आपके द्वारा दिये गए सहयोग और सेवा के लिए यदि आप सामने वाले से अच्छा सुनने को आस लगाए हो तो वह सहयोग नहीं धंधा है, व्यापार है, क्योंकि स्वयं के द्वारा की गई करणी कभी व्यर्थ नहीं जाती, आपने जो सेवा-सहयोग निस्वार्थ भाव से किया है, उसका सुफल कर्म सत्ता देगी ही, तुम दुसरों से क्यों आस करते हो। परिजन, रिश्तेदार, मित्र सहयोगी यदि कोई भूल या अपराध कर दे या तुम्हारा अपमान कर दे तो भी उसे क्षमा करो, तभी तो शांति-समाधि मिलेगी, आप सामर्थ्यवान हो और सामने वाला हीन है और उसने अक्षम्य अपराध किया है फिर भी उसको क्षमा करना ही पर्युषण पर्व की सच्ची आराधना है, क्योंकि यदि सामने वाला सामर्थ्यवान है तो उसके सामने तो यूं भी बोल नहीं सकते, इसलिए वो असली क्षमा नहीं है, खुद सामर्थ्यवान होकर भी कमजोर, असहाय, हीन को क्षमा करना ही असली क्षमापना है, अपमान कौन महसूस करता है जिसे मान होता है, मान का जिसने संथारा करवा दिया उसे कभी अपमान महसूस नहीं होगा। ग्रहण करने पर दुख होता है, यदि ग्रहण ही नहीं करोगे तो दुख होगा ही नही, प्रतिकूल व्यवहार करने वालों से भी अनुकूल व्यवहार करो, क्योंकि ये अनादर और अपमान करने वाले तुम्हें चार गति में भटकने से बचा रहे हैं, तुम हेकड़ी मत दिखाना और किसी का अपमान मत करना नहीं, तो ननिहाल (निगोद) की सैर करनी पड़ेगी, तिरस्कार के कारण जीव विचलित हो जाता है, अहंकार क्षमायाचना करने नहीं देता और तिरस्कार क्षमा देने नही देता, सब कर्मो का खेल है यदि कर्म सिद्धान्त को सही से समझ कर आचरण करो तो तुम्हारी तिर्यंच व नरक गति बन्द हो जाएगी। नए कर्म का बंधन करने से बच जाओगे तो संसार से तीर जाओगे। संसार का हर जीव चाहे वह छोटा हो या बड़ा प्रेम व स्नेह चाहता है। 'जिनागम' के भाव समझ कर धर्म आराधना करोगे तो यहाँ भी आनंद और वहां भी आनंद...

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

Madhuban Toyota

A fresh experience in customer delight

TOYOTA

Where Awesome drives meet hybrid innovation!

HYBRID ELECTRIC SUV

URBAN CRUISER
HYRYDER

Sales - Kurla | Bandra | Lower Parel | Breach Candy | Badlapur

022 4243 1999 | +91 98197 97976

TOYOTA U TRUST

Buy | Sell | Exchange - Used cars

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

तीर्थंकर महावीर निर्वाणोत्सव विशेष

देश भर में विराजमान परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं के चरणों में नमोस्तु, वंदामि, इच्छामि

मिच्छामी दुक्कड़म

Narendra Hirawat
Mob.: 9821040899

Narendra Hirawat & Co.

A/ 1502, Naman Midtown, S.B. Road,
Prabhadevi, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400013

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अहिंसा परमो धर्मः
"जैनं जयति शासनम्"

पर्यूषन पर्व के इस पावन अवसर पर हृदय की गहराई से हम सभी क्षमा याचना करते है।

दलीचंद जैन • अशोक जैन एवं समस्त जैन (चोरडिया) परिवार,

क्षमा भाव

भवरलालजी आणि कांताई जैन परिवार

जैन इरिगेशन सिस्टीम्स् लि.
कल्पना कणापरी, ब्रह्मांडाचा भेद करी.

जैन फार्म फ्रेश फूड्स लि.
A JAIN IRRIGATION COMPANY

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई जैन फाऊंडेशन, जळगाव
कल्पना... कल्पना... कल्प!

कांताई नेत्रालय
आय केयर फॉर यू

eye care boutique

जैन हेल्थ केअर लिमिटेड

अनुभूति स्कूल

गांधी रिसर्च फाऊंडेशन
• सत्य • अहिंसा • सतो

गौराई कृषी-तंत्र निकेतन

माईसाहेब सुंदरलाल मलाश पोटेंशियल डेवलपमेंट अकेडमी

परिणामबाई चौपडी मेमोरियल ट्रस्ट

जैन स्पोर्ट्स अकेडमी

जैन हिल्स्, जलगाव-४२५००१, ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

भारत • युएसए. • मेक्सिका • ब्राझील • चिली • अर्जेंटिना • यूके • आयर्लंड • उत्तर आयर्लंड
फ्रान्स • स्पेन • ग्रीस • तुर्की • रशिया • इस्त्रायल • चीन • ऑस्ट्रेलिया

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक ०१, सितंबर २०२५

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ० **सम्पादकीय** ० दिगम्बर श्वेताम्बर

जिनागम नाम ही अपने आप में क्रांति है

हम सब जैन धर्मावलंबी शास्त्रों में लिखी बातों को पढ़ते हैं, मनन करते हैं और अपने जीवन में उतारते हैं, इन शास्त्रों का अपना एक नाम भी होता है,उस नाम से ही हम शास्त्र का चयन करते हैं, इसी प्रकार जैन पत्र-पत्रिकाओं का भी अपना एक नाम होता है। माना कि जैन श्रावक-श्राविकाएं आज पत्र-पत्रिकाएं कम पढ़ने लगे हैं, फिर भी आधुनिक क्रांति के समय 'जिनागम' पत्रिका आज भी संभ्रांत परिवारों में सम्मान के साथ शास्त्र के रूप में पढ़ी जा रही है, पूर्व में सम्मान जैसा था वैसा आज भी है।

लगातार २८ सालों से प्रकाशित 'जिनागम' पत्रिका ने जैन समाज में अपनी एक सम्मानित पैठ बनाई है, लोग इंतजार करते हैं, कभी-कभी एक आध दिन पोस्ट के द्वारा 'जिनागम' पत्रिका मिलने पर देरी हो जाने से 'जिनागम' के राष्ट्रीय कार्यालय के फोन की घंटी बजनी शुरू हो जाती है, कारण यह है कि 'जिनागम' पत्रिका ने 'जैन एकता' का जो बिगुल बर्षों पहले बजाया था,आज वह जन-जन की हृदय का धड़कन बन चुका है, जैन धर्म की युवा पीढ़ी तो आज कहना भी शुरू कर चुकी है की छोड़ो दिगम्बर- श्वेताम्बर, हम तो केवल 'जैन' हैं, २४ तीर्थंकरों के अनुयाई हैं, 'णमोकार मंत्र' हम सबका एक है, 'जियो और जीने दो' संदेश है हमारा और 'अहिंसा परमो धर्म' नारा है हमारा.....

मित्रों! यदि युवा पीढ़ी को मंदिरों, उपासरों में लाना है तो हमें 'जैन एकता' अभियान को सफल बनाना है। मैं, 'क्षमा' पर्व के पावन समय पर सभी वरिष्ठ जैन समाज के नेता व साधु-साध्वी के चरणों में विनंती करता हूं कि आपसी वैमनस्यता को भुलाकर 'जैन एकता' अभियान में साथ दें, सहयोग करें और भविष्य निर्धारित करें, उन विशाल मंदिरों का, जिसको हम और हमारे वरिष्ठों ने अपनी मेहनत व लगन से सींचा है।

कहते हैं युवा पीढ़ी समाज व देश का भविष्य हैं, और हमारी युवा पीढ़ी हमारे जैन दर्शन के भविष्य हैं, आईए! हम सब मिलकर युवा पीढ़ी की भावनाओं का सम्मान करें, उन्हें मंदिरों व जैन समाज द्वारा निर्मित संस्थाओं के संचालन की जिम्मेदारी व मार्गदर्शन दें। विश्वास दिलाता हूं कि हमारे जिन शासन का भविष्य उज्जवल रहेगा।

'क्षमा' पर्व के दिवस पर आप सभी से हृदय पूर्वक 'क्षमा' याचना करता हूं कि मेरी लेखनी के द्वारा कभी भी यदि किसी को जरा सी भी ठेस पहुंची हो तो हृदय से 'क्षमा' मांगता हूं और निवेदन भी करता हूं की निस्वार्थ भाव से मेरे द्वारा लिखी संपादकीय पर जरूर विचार करें, जिन शासन के भविष्य के लिए.....

जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Michhami Dukkadam

RSM Astute Consulting Group

- RSM Astute Consulting Group, along with its affiliates (together referred as 'RSM India'), has been ranked amongst **India's top 6 accounting, tax and consulting groups** [International Accounting Bulletins]
- Indian member of **RSM International,** the world's 6th largest accounting, tax and consulting network with global revenue of US$ 10 billion (Rs. 86,000 crores)
- Largest first-generation home-grown firm in the top 10 in India Founded by Dr. Suresh Surana, the Group is one of the prominent Jain groups in the **Knowledge Business**
- Core services include Internal Audits & Risk Advisory, Corporate Tax & GST, IT Systems Assurance & Solutions and Operations Consulting
- Clients include several large Indian groups, multinational corporations and first-generation entrepreneurs

Founded
1985

Personnel
3,000+

India offices
14

6th Largest Accounting, Tax & Consulting Firm

Mumbai Offices

Nariman Point: 8th Floor, Bakhtawar, 229, Nariman Point, Mumbai - 400 021

Andheri: 3rd Floor, Technopolis Knowledge Park, Mahakali Caves Road, Andheri (E), Mumbai 400 093

Tel: (91-22) 6121 4444 / 6108 5555 **Fax:** (91-22) 6108 5556 **Emails:** emails@rsmindia.in **URL:** www.rsmindia.in

Offices: New Delhi (NCR) * Chennai * Kolkata * Bengaluru * Surat * Hyderabad * Ahmedabad* Gandhidham * Pune * Jaipur * Vijayanagar * Navi Mumbai* Gurugram*

RSM

FOR FRANCHISEE & INSTITUTIONAL ENQUIRY CALL: 8657939718 022-269014400
OR EMAIL AT FRANCHISEE@KEWALKIRAN.COM | WWW.KILLERJEANS.COM

A LIFESTYLE BRAND FROM KKCL KEWAL KIRAN CLOTHING LIMITED

FOLLOW US ON:

ajmera©
FASHION
"सम्मान भरी सुंदरता"
आत्मा को पूनित करने वाले माहामंगलकारी पर्यूषण महापर्व पर सभी
जैनाचार्यों, साधु-साध्वीजी, महाराज साहेब श्रावक-श्राविकाओं से
उत्तम क्षमा
info@ajmerafashion.com
www.ajmerafashion.com
G-1, Ground Floor, Surana 101, Sahara Darwaja, Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat- 395002

क्या आप जैनों की कम जनसंख्या को लेकर चिंतित हैं?

अगर हम देश में फैले सभी जैनों को मुख्यधारा में लाकर जैनों की संख्या को करोड़ों में देखना चाहते हैं तो जैन समाज को सभी आडंबर युक्त कार्यों को तिलांजलि देकर जो आर्थिक रूप से पिछड़ गये हैं, उनके लिए साधार्मिक सेवा के फंड का निर्माण करना होगा।

जैन समाज को फिर से गौरवशाली बनाना है तो हमारे समाज को कुछ सालों तक आडंबर युक्त कार्यों को बंद करना पड़ेगी, तख्ती प्रथा को तिलांजलि देनी पड़ेगी। हमारी आर्थिक शक्ति को समग्र जैन समाज को जोड़ने के लिए केंद्रित करना होगा।

ईसाई एवं मुस्लिम समाज दूसरे देशों में अपने धर्म को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आरएसएस सनातनी समाज को संगठित करने में लगा हुआ है।

हम करोड़ों से लाखों पर आ गए, जो साधर्मिक भाई-बहन आर्थिक रूप से पिछड़ रहे हैं, उनकी मदद करने के लिए हमारे पास का अभाव है। छोटी जनसंख्या की वजह से भारत की राजनीति में हम शुन्य बन कर रह गए हैं, हमारे समाज एवं हमारे गुरु भगवंत इस गलतफहमी शिकार हैं कि सिर्फ मारवाडी एवं गुजराती व्यापारी ही जैन समाज है, यह एक बहुत बड़ी गलतफहमी है। वास्तव में 'जैन' का मतलब होता है वह व्यक्ति, जो जैन धर्म का पालन करता है। वास्तविकता यह है कि जैन धर्म का पालन करनेवाले भारत के लगभग हर प्रदेश में है। भारत में कम से कम ११० ऐसे समूह हैं, जो जैन धर्म का परंपरा से पालन करते हैं।

दक्षिण भारत का जैन समाज: दक्षिण भारत में कुछ मराठी, कन्नड, तुलु और तमिल भाषी समाज हैं, जो परंपरा से जैन धर्म का पालन करते हैं। केरल में भी कुछ मलयालम भाषी समाज हैं, जो जैन धर्मी है, हालांकि उनकी संख्या एकदम कम है। दक्षिण के जैन समाज का गौरवशाली इतिहास है जो ४००० वर्ष से भी ज्यादा है। दक्षिण महाराष्ट्र और उत्तर कर्नाटक में जैनों की संख्या काफी बड़ी है, यह लोग ज्यादातर किसान परिवारों से हैं। तटीय कर्नाटक का जैन समाज बहुत समृद्ध है। यह लोग कॉफी, नारियल आदि के बड़े-बड़े बागान के मालिक हैं। पोर्तुगीजों से लोहा लेने वाली रानी अबक्का इसी समाज से थी। दक्षिण कर्नाटक के गौड़ा समाज के कई लोग जैन धर्म का पालन करते हैं। वास्तव में प्राचीन युग और मध्यकाल में ज्यादातर 'गौडा' जैन थे, लेकिन बाद में कई कारणों से उन्होंने वैष्णव या शैव धर्म अपनाया। आजकल गौडा समाज के कई लोग फिर से जैन धर्म अपना रहे है। गौडा समाज कर्नाटक का एक प्रमुख प्रभावशाली समाज है। दक्षिण कर्नाटक में 'जैन ब्राम्हण' नाम की जाति है, यह लोग जैन धर्मावलंबी हैं। मैसूरु शहर में इनका एक जैन छात्रावास भी है।

बुंदेलखंड का जैन समाज: उत्तर भारत के बुंदेलखंड में लाखों की संख्या में जैन मौजूद हैं। यहां के जैन समाज से बड़े-बड़े जैन विद्वान, जैन मुनि, लेखक, प्रशासनिक अधिकारी आदि हो गए हैं। ओशो रजनीश भी इसी समाज से थे।

पूर्व भारत का जैन समाज: पूर्व भारत के झारखण्ड, बंगाल, उडीसा आदि राज्यों में 'सराक' नाम का एक समाज है। 'सराक' यह शब्द श्रावक शब्द का अपभ्रंश है, इनकी संख्या काफी बड़ी है, यह लोग 'जैन' ही हैं लेकिन जैन समाज के मुख्य प्रवाह से टूट गये थे। साधार्मिक सेवा के सहारे धीरे-धीरे इन लोगों को मुख्य प्रवाह में शामिल किया जा सकता है।

आदिवासी जैन: गुजरात में लाखों की संख्या में आदिवासी लोग हैं जो जैन धर्म का पालन करते हैं। अन्य प्रदेशों में भी आदिवासीयों के कुछ समूह जैन धर्म का पालन करते हैं। इन्हें साधार्मिक सेवा के सहारे मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

मातंग समाज में जैन धर्म: महाराष्ट्र, कर्णाटक, तेलंगाना, गुजरात आदि प्रदेशों में 'मातंग' नाम का समाज है. तेलंगाना में इन्हें मादिगा नाम से जाना जाता है, 'मातंग' प्राचीन समाज है, जिसका उल्लेख प्राचीन जैन ग्रंथों में कई स्थानों पर पाया जाता है। हमारे कुछ प्रसिद्ध संत आदिवासी एवं ओबीसी समाज से आते हैं। साधार्मिक सेवा के जरिए इनमें से बहुत लोगों को जैन समाज के मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है। भारत भर में कई ऐसे समाज है जो मध्य काल में 'जैन' थे लेकिन अब 'जैन' नहीं हैं।

इन सब बातों को मद्देनजर में रखते हुए जैन समाज एवं गुरु भगवन्तों को अपना पूरा ध्यान साधार्मिक सेवा पर केंद्रित करना चाहिए।

देश भर में विराजमान परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं के चरणों में नमोस्तु, वंदामि, इच्छामि

उत्तम क्षमा

Hansmukh Jain Gandhi
Expert Panel Member Of Community Leaders Of The National Commission For Minority In State
Mob: 9302103513
211, Devdhar Complex, Chawani, Indore, Madhya Pradesh, Bharat- 452001
Email: hansmukhjaingandhi@gmail.com
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पधारो म्हारे देश

पहले-मातृभाषा फिर-राष्ट्रभाषा

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मे भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **मेड़ता सिटी** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th September 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598